thearyasamaj.org

।। ओउम् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द–१९१,
सृष्टि सं.–१९६०८५३११५

वर्ष-13 / अंक-10 / आश्विन कृ. 8 से आश्विन शु. 6 सं. 2071 वि. / 16 से 30 सितम्बर 2014 / अमरोहा (उ.प्र.) / पृ.- 14 / प्रति- 5/-

महाशय धर्मपाल वेद अनुसन्धान केन्द्र केरल पर विशेष परिशिष्ट

सिंगापुर व थाईलैण्ड चलो

सार्वदेशिक सभा, दिल्ली के तत्वावधान में 01 व 02 नवम्बर 2014 को सिंगापुर तथा 08 व 09 नवम्बर 2014 को थाईलैण्ड में होंगे अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन।

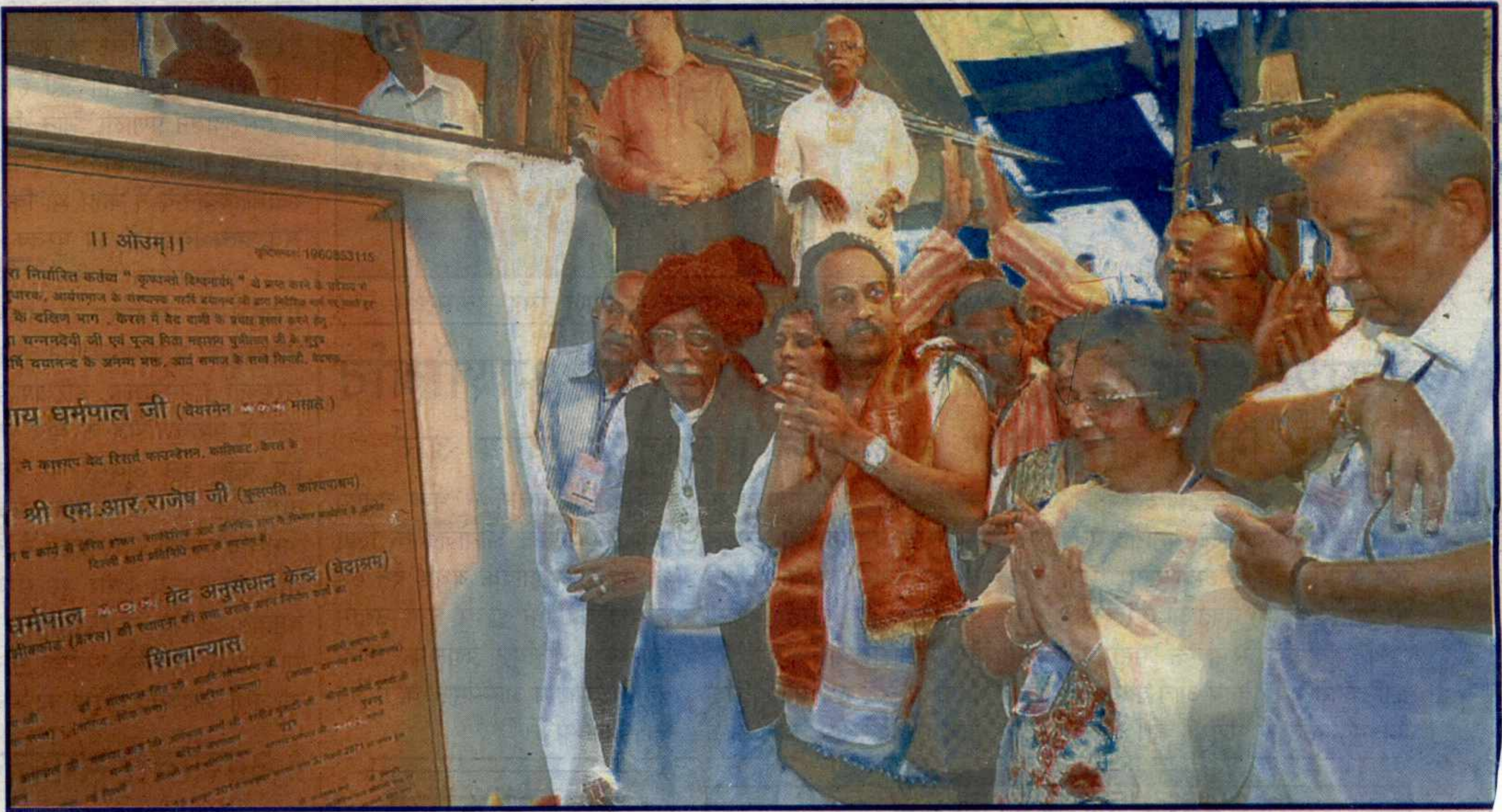

वैदिक रिसर्च डाउंडेशन का शिलान्यास करते महाशय धर्मपाल व उपस्थित आचार्य व अतिथि- केसरी।

केरल में अभूतपूर्व वैदिक क्रांति का शंखनाद

सार्वदेशिक सभा एवं कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन के तत्वावधान में

महाशय धर्मपाल वेद अनुसंधान केन्द्र का शिलान्यास

डॉ. अशोक कुमार आर्य
केरल

इस वर्ष 15 अगस्त 2014 को देश में दो बड़ी व ऐतिहासिक घटनाएं एक साथ हुईं। एक ओर जहां लाल किले की प्राचीर से देश के प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी स्वतंत्रता दिवस पर देशवासियों को सम्बोधित कर रहे थे वहीं कोझीकोड में भी उस समय एक नया इतिहास लिखा जा रहा था जब एमडीएच के स्वामी महाशय धर्मपाल जी के पावन योगदान से वेद अनुसंधान केन्द्र का शिलान्यास किया गया। हमें आर्यजगत को यह बताते हुए हर्ष है कि 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस की पावन बेला में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन के तत्वावधान में 'आर्यरत्न' महाशय धर्मपाल जी के कर कमलों द्वारा एम.डी.एच वेद अनुसंधान केन्द्र (वेदाश्रम) की स्थापना हेतु भव्य शिलान्यास समारोह का आयोजन किया गया। साथ इस अवसर पर 2008 कुण्डीय राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ का भी ऐतिहासिक आयोजन अपनी यादगार छोड़ गया।

एमडीएच के चेयरमैन
'आर्यरत्न' महाशय धर्मपाल
द्वारा नव संकल्पित 'वेदाश्रम' भवन का शिलान्यास

आर्य शिरोमणि महादानी महाशय धर्मपाल जी ने लिया

दो करोड़ रूपये दान देने का निर्णय दो सैकण्ड में

एमडीएच वेद रिसर्च फाउण्डेशन के सूत्रधार विश्व प्रसिद्ध व्यक्तित्व आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी गत फरवरी मास में केरल के कोझीकोड में आयोजित समारोह में भाग लेने आए। वहां वेदाश्रम के लिए भूमि दिखाई गई तो उन्होंने तुरन्त कहा खरीद लो एवं पूछा कि कितने की है? उन्हें जानकारी दी गई कि दो करोड़ रूपये की। महाशय जी ने कहा ठीक है। इस निर्णय में महाशय जी ने दो सैकेण्ड का भी समय नहीं लिया। महाशय जी वेदाश्रम के लिए पूर्ण व्यय कर सकते हैं। लेकिन आर्यजनों को प्रेरित करने के लिए एक करोड़ ग्यारह लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रूपये (रू. 1,11,11,111/–) दान देने की घोषणा विशाल मंच से की। महाशय जी की घोषणा से आर्यजनों ने राशि देने की घोषणा शुरू कर दी है और इसी दिन 75 लाख रुपये के संकल्प व्यक्त किए गए। कार्यक्रम में उपस्थित एक ऑटो चालक ने भी मंच पर आकर 10,000 रू. दान दिए। विशाल मंच पर स्वामी प्रणवानन्द जी ने महाशय धर्मपाल जी के द्वारा महर्षि दयानन्द के मिशन एवं आर्यसमाज के कार्यों की प्रशंसा करते हुए महाशय धर्मपाल जी को "महात्मा" कहकर सम्बोधित किया।

विनय आर्य को गले से लगाते महाशय जी व मंचासीन सांसद सत्यपाल सिंह- केसरी।

महाशय जी ने दिया विनय आर्य को आशीर्वाद

ऋषि मिशन को विश्व में फैलाने को प्रतिबद्ध हैं विनय आर्य

केरल। एमडीएच वेद अनुसंधान केन्द्र के शिलान्यास के समारोह एवं राष्ट्र समृद्धि यज्ञ के अवसर पर मंच पर उपस्थित सभी वक्ताओं ने दिल्ली-आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री क्रान्तिकारी युवा विनय आर्य के कार्यों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

इस अवसर पर एमडीएच के स्वामी महाशय धर्मपाल जी ने खड़े होकर विनय आर्य के कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें अपना स्नेहाशीष प्रदान किया।

केरल में हुए इस ऐतिहासिक और यादगार समारोह की सभी उपस्थित आर्यजनों ने भव्य बताया तथा इस सफल आयोजन के लिए श्री आर्य को हार्दिक बधाई देते हुए कामना की कि ईश्वर उन्हें उत्तम स्वास्थ्य व दीर्घायुष्य प्रदान करे ताकि वह विश्वभर में आर्यसमाज के मिशन को फैला सकें।

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 350/- तथा तीन बार की रु. 500/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

: विज्ञापन कॉलम :

इस कॉलम में अपने प्रतिष्ठान अथवा संस्थान के क्रियाकलापों तथा उपलब्धियों एवं जन्मदिन, वर्षगांठ तथा विभिन्न पर्वो पर शुभकामनाओं के प्रकाशन के लिए तुरंत सम्पर्क करें और अधिक से अधिक लाभ उठाएं। चलभाष- 09758833783, 09412139333

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा- २०१५

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- १५ फरवरी से २१ फरवरी २०१५

प्रस्थान : 15 फरवरी 2015 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप। 14 फरवरी 2015 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्य समाज मंदिर, गंज स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद, दूरभाष- 09410065832 **वापसी :** 21 फरवरी 2015 रात्रि अहमदाबाद मेल से देहली तक।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

पोरबन्दर, द्वारिका, सोमनाथ मंदिर, साबरमती आश्रम, अहमदाबाद आदि दर्शनीय स्थल

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास, परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था उप सभा द्वारा होगी। **आप 3000/- रूपये का ड्राफ्ट आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अमरोहा के नाम से खाते में भिजवा दें या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। राशि 3000/- 15 दिसम्बर 2014 तक प्राप्त हो जानी चाहिए।** समुचित व्यवस्था में आपका सहयोग प्रार्थनीय।

यात्रियों को आवश्यक निर्देश :- ● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, मतदाता परिचय-पत्र, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● बहुमूल्य सामान साथ न रखें। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, सूचित करें। ● परिभ्रमण काल में आवास आर्यसमाज मन्दिर, पोरबन्दर, अहमदाबाद में रहेगा। ● कार्यक्रम संयोजक को व्यवस्था परिवर्तन का अधिकार है।

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं...

□ श्रीराम गुप्ता- संरक्षक, □ हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412), □ डॉ. अशोक कुमार आर्य- प्रधान (09412139333), □ डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार- मंत्री (09412634672), □ ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य- कोषाध्यक्ष (09412493724), □ नरेन्द्र कांत गर्ग- संयोजक (09837809405)।

वेद में भरा है ज्ञान-विज्ञान

गार्गी वैदिक
ग्रेटर नोएडा।

आधुनिक समाज न धर्म को जानता है, न अधर्म को। यह स्वयं को स्वार्थपरता की ओर ले जा रहा है। सर्वत्र ही कर्तव्य के स्थान पर अधिकार की मांग हो रही है। वेद में हमें जीवन प्रणाली, ज्ञान, विज्ञान आयुर्वेद के दर्शन होते हैं। इसीलिए स्वामी दयानन्द ने कहा था कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।

महाभारतकालीन विमान झज्झर गुरुकुल के संग्रहालय में आज भी विद्यमान है। ये विचार स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती (महेन्द्रगढ़, हरियाणा) ने ऋग्वेद पारायण यज्ञ के बाद बोलते हुए कहे। इस अवसर पर स्वामी कृष्णदत्त जी के शिष्य आचार्य अरविन्द शास्त्री (बरनावा) ने चारों वेदों को मानव शरीर से सम्बन्ध बताये। ऋग्वेद से मस्तिष्क का, सामवेद से हृदय का, यजुर्वेद से बाहु का तथा अथर्ववेद से पेट का संबन्ध होता है।

इस अवसर पर सुमन कुमार वैदिक ने ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के विषय में बताते हुए कहा कि बिना शिक्षा प्राप्ति के उच्च कोटि के प्रवचन ब्रह्मचारी जी देते थे। उन्होंने आगे कहा कि आज मानव मान-अपमान का जीवन जी रहा है। जो बात उसके अनुकूल है, वह उसे ठीक लगती है और जो विरुद्ध है, उसके प्रति क्रोध प्रकट किया जाता है। वैद्य विक्रमदेव शास्त्री (बरनावा) ने कहा कि विरोध करना है तो मान-अपमान को छोड़ दो। घृणा करनी है, तो काम, क्रोध, मद लोभ से करो। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी की प्रेरणा से ग्रेटर नोएडा के बीटा सैक्टर के जे ब्लॉक में गत दस वर्षों से तीन दिवसीय यज्ञ वेदों से जन्माष्टमी पर किया जाता है, जिसमें आयोजक ब्लॉक के प्रत्येक गृह में जाकर यज्ञ का निमंत्रण देते हैं, तथा उन्हें यजमान भी बनाते हैं। इस वर्ष यह कार्यक्रम 15 से 17 अगस्त तक किया गया।

आजीवन समाजसेवा का लिया संकल्प

आचार्य रणजीत विवित्सु
नवापारा (उड़ीसा)

गुरुकुल आश्रम आमसेना में 10 अगस्त श्रावण पूर्णिमा को दो नवयुवकों- ब्र0 राकेश कुमार आर्य तथा ब्र0 प्रवीण कुमार आर्य (पुनीराम) ने धर्मानन्द सरस्वती से दीक्षा लेकर आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचारी की दीक्षा लेकर अपना सर्वस्व देश को सौंप दिया। इस गरिमामय कार्यक्रम में स्वामी व्रतानन्द सरस्वती डॉ0 कुंजदेव मनीषी एवं बहुत से विद्वान एवं अतिथिगण उपस्थित थे। अन्त में स्वामी धर्मानन्द ने दोनों ब्रह्मचारियों के इस साहसिक कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की। ज्ञातव्य है कि स्वामी धर्मानन्द सरस्वती ने हरियाणा प्रान्त से आकर उड़ीसा प्रान्त के एक अकालग्रस्त कालाहाण्डी (वर्तमान नुआपाड़ा) जिले में गुरुकुल आमसेना नामक वृहद् संस्था की स्थापना की। और वर्तमान में इस गुरुकुल से अन्य 18 संस्थाएं संचालित हैं।

तिलक का जन्मदिन मनाया

टनकपुर, चम्पावत (डॉ० दिनेश चन्द्र शास्त्री)। 23 जुलाई को सरस्वती साम मन्दिर के प्रांगण में नेताजी सुभाष लोक सेवा समिति के तत्वावधान में प्रबन्धक रामबाबू की अध्यक्षता व दिनेश चन्द्र शास्त्री के संचालन में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया तथा क्रान्तिकारियों के जीवन के विषय में कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

मनाया उधमसिंह का बलिदान दिवस

टनकपुर (डॉ० दिनेश चन्द्र शास्त्री)। 31 जुलाई को नेताजी सुभाष लोक सेवा समिति के तत्वावधान में प्रधानाचार्य विशन सिंह विष्ट के संचालन में आयोजित अमर शहीद उधमसिंह बलिदान दिवस कार्यक्रम में विभिन्न वक्ताओं द्वारा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया।

साधना शिविर १४ से

रोजड़, गुजरात (दिनेश कुमार)। दर्शन योग महाविद्यालय में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में एकवर्षीय सघन साधना शिविर का आयोजन आगामी 1 अक्टूबर 14 से 30 सितम्बर 15 तक लगाया जा रहा है। इस शिविर के लिए स्वामी सत्यपति महाराज का आशीर्वाद व शुभकामनाएं भी प्राप्त हैं। विस्तृत जानकारी हेतु फोन नं0 09409415011, 09409415017 तथा 02770-287418 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

शीघ्र प्रकाशित हो रहे हैं

आर्यावर्त केसरी के आगामी विशेषांक

(१) आर्यजगत के कवि विशेषांक (२) आर्यजगत के दर्शनीय ऐतिहासिक स्थल विशेषांक (३) आर्यजगत द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्प विशेषांक तथा ऐसे ही अन्य अनेक विशेषांक...

thearyasamaj.org

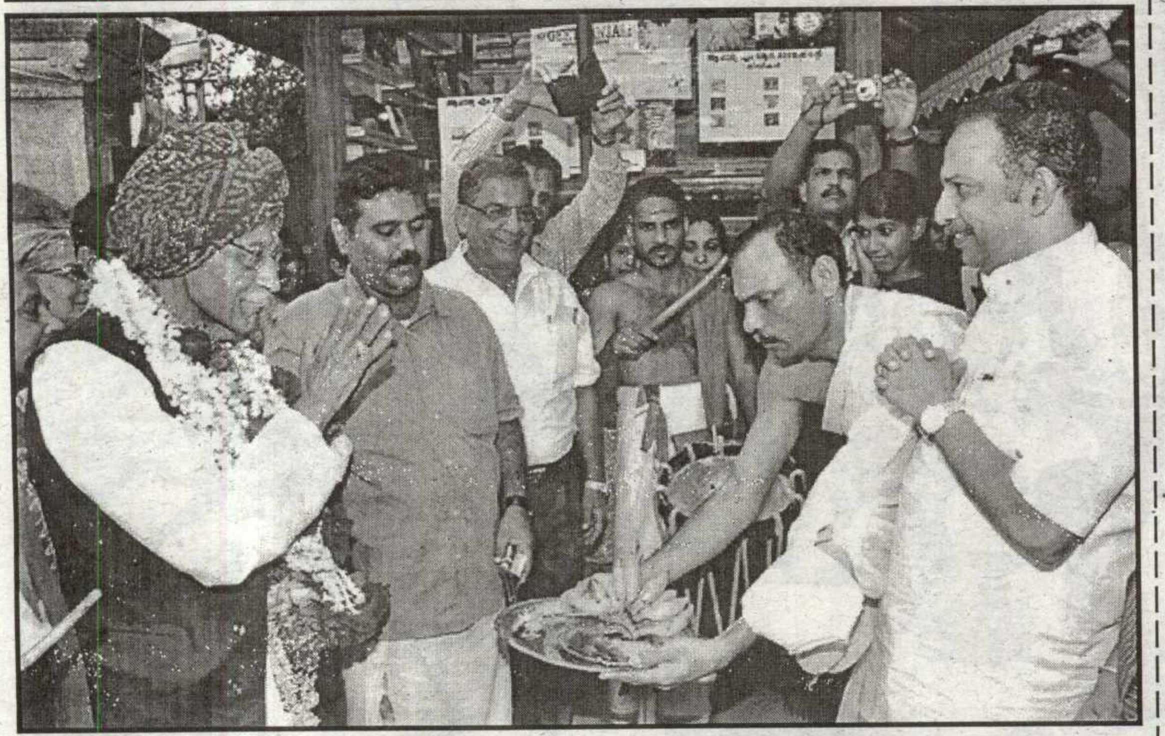

आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी का अभिवादन करते आचार्य एम०आर० राजेश- केसरी।

एमडीएच वेद अनुसंधान केन्द्र

ऐतिहासिक रहा शिलान्यास समारोह

- देश भर से पधारीं अनेक विभूतियाँ

विनय आर्य/अरविन्द पाण्डेय
केरल

कोझीकोड में एमडीएच वैदिक रिसर्च फाउण्डेशन (वेदाश्रम) का शिलान्यास समारोह अपनी ऐतिहासिक छाप छोड़ गया। इस अवसर पर जहां वेद की ऋचाओं से राष्ट्र समृद्धि यज्ञ सम्पूर्ण परिवेश सुगंधमय हो गया था। वहीं वेद मन्त्रों और गगनभेदी वैदिक उद्घोषों से सम्पूर्ण परिक्षेत्र गूंज उठा। इस अवसर पर देशभर से पधारीं अनेक विभूतियां इस ऐतिहासिक समारोह की साक्षी रहीं।

वेदाश्रम के इस शिलान्यास समारोह में आर्य जगत के ख्याति प्राप्त स्वामी सदानन्द (पंजाब), स्वामी प्रणवानन्द (दिल्ली), स्वामी सौम्यानन्द (हरयाणा), स्वामी ऋतस्पति (होशंगाबाद), महात्मा ब्रह्ममुनि, महाशय धर्मपाल चेयरमेन एम.डी.एच., सत्पाल सिंह माननीय संसद सदस्य, विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, धर्मपाल आर्य वरिष्ठ उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, राजीव आर्य महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, राधाकृष्ण वर्मा, छत्तीसगढ़ सभा के मन्त्री दीनानाथ वर्मा एवं दिल्ली सभा के उप प्रधान ओम प्रकाश आर्य सहित देश के प्रत्येक कोने से आर्यजन उपस्थित थे।

महाशय जी ने कहा

हम तो एक छोटी सी आहुति देने आए हैं

महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच मसाले वालों ने समारोह में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि यदि स्वर्ग चाहते हो तो ओउम् का जाप करो, यज्ञ करो। वेद का यही आदेश है– इस विचार को आचार्य जी घर–घर पहुंचा रहे हैं। जितना महान ये यज्ञ कर रहे हैं उसमें हम तो एक छोटी सी आहुति देने आए हैं। केरल के लिए दो करोड़ रुपये दान देने की घोषणा करने वाले महाशय जी ने यह भी प्रार्थना की कि परमात्मा हम सबको ऐसा आशीर्वाद दे कि हम सब मिलकर यह कार्य पूरी शक्ति से कर सकें।

कार्यक्रम का प्रारंभ राष्ट्रीय प्रार्थना के साथ हुआ जिसमें चारों वेदों के मंत्रों का पाठ किया गया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वैदिक ओउम् ध्वज के साथ ही राष्ट्रगान पूर्वक राष्ट्रीय ध्वजारोहण भी किया गया। आर्य संन्यासी स्वामी प्रणवानंद सरस्वती ने ऐसे भव्य आयोजन और शुभ संकल्प के लिए महाशय धर्मपाल जी को आशीर्वाद देते हुए सभी दिशाओं में इस प्रकार के आश्रम खोलने को कहा। कार्यक्रम में स्वामी सौम्यानन्द, स्वामी ऋतस्पति, डॉ० ब्रह्ममुनि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। वेदाश्रम के इस शिलान्यास समारोह के अवसर पर आर्य समाज के सिद्धांतों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए आचार्य एम. आर. राजेश जी द्वारा मलयालम भाषा में लिखी गई नौ पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।

केरल के कोझीकोड में आयोजित इस भव्य समारोह में देश के विभिन्न आर्य समाजों से आर्यजन पहुंचे थे। इस समारोह की सबसे बड़ी विशेषता रही आगन्तुक अतिथियों का अतिथि सत्कार, जिसने आने वाले प्रत्येक जन का हृदय जीत लिया। रेलवे स्टेशन से समारोह स्थल तक ले जाने, ठहरने का जो प्रबंध आयोजक कश्यप वेद रिर्सच फाउण्डेशन ने किया उसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है।

वेद ज्ञान का यह सूर्य फैलाएगा ज्ञान का प्रकाश : सांसद

बागपत से १५वीं लोकसभा के लिए निर्वाचित आर्य नेता संसद सदस्य सत्यपाल सिंह ने कहा कि लार्ड मैकाले ने भारतीय संस्कृति को नष्ट करने का जो कुचक्र रचा उसका निराकरण वैदिक संस्कृति के संरक्षण और व्यापक प्रचार से ही संभव है। उन्होंने कहा कि यहां आकर वो देखा, जो सोचा भी नहीं था। जो देखा वो स्वप्न ही है। महाराष्ट्र के पूर्व डीजीपी रहे श्री सिंह ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि सुदूर केरल में उचित वेद ज्ञान का यह सूर्य पूरे भारत में वेद ज्ञान का प्रकाश फैलाएगा।

महान शिक्षाविद् व समाज सुधारक

महात्मा हसंराज

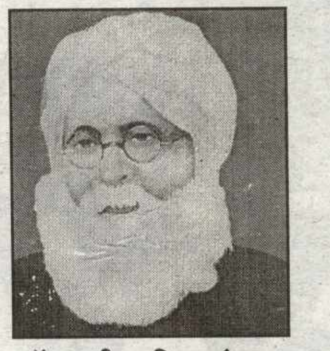

डॉ० यतीन्द्र विद्यालंकार

त्याग की साक्षात मूर्ति सरलता एवं सादगी का सजीव चित्र निरभिमानता के आदर्श महात्मा हंसराज के कर्मठ व्यक्तित्व एवं महान कृतित्व का यशोगान भारत ही नहीं, अपितु जहां-जहां आर्य समाज व डी०ए०वी की किरण पहुंची है, देश-विदेश में बड़े गौरव व सम्मान के साथ हो रहा है। उनका सारा जीवन तप और त्याग का जीवन है। हिन्दू समाज को सुधारने और दुखी भूकम्प, अकाल, दुर्भिक्ष, महामारी से पीड़ित जनमानस की सेवा के लिए वे सदैव तत्पर रहे। वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द, महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज, आर्यसमाज और हंसराज, हंसराज और डी०ए०वी० आन्दोलन। एक ऐसा ऐतिहासिक संयोग, जो पारस्परिक भारतीय परम्परा की कडी को जोड़ता है। लम्बी दाढ़ी और मुख पर अद्भुत तेज, अपना एक खास लिबास, आर्य समाज को पूर्णतया समर्पित, एक महान शिक्षाविद्, समाज सुधारक व वैदिक प्रचारक महात्मा हंसराज का नाम लेते ही उनके आदर्श व्यक्तित्व एवं महान कृतित्व की स्मृतियां स्वत: जीवन्त हो उठती हैं- *जिस्म की मौत कोई मौत नहीं होती/ जिस्म के मर जाने से इन्सान नहीं मर जाते/ धड़कनें रुकने से अरमान नहीं मर जाते/ सांस थम जाने से ऐलान नहीं मर जाते/ होठ थम जाने से फरमान नहीं मर जाते।*

आज डी०ए०वी० का विराट रूप आर्य समाज के अनुरूप उनके फरमान को पूर्ण कर रहा है। देश के कोने-कोने में शिक्षा का प्रचार व प्रसार कर रहा डी०ए०वी० विदेशों में भी ज्ञान-ज्योति को आलोकित कर रहा है। महर्षि दयानन्द ने सबसे प्रमुख बल शिक्षा पर दिया है। शिक्षा के बिना मनुष्य पशुवत् है। महात्मा हंसराज जी के जमाने में भारत पराधीन था। ईसाई मिशनरी भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा व सहायता की आड़ में निरंतर समाप्तप्राय करने में संलग्न थी। ऐसे समय में आवश्यकता थी कि कोई महापुरुष उठे और ऐसी शिक्षा प्रणाली को ईसाइयत के प्रतिपक्ष में प्रस्तुत करे, जो आधुनिक भी हो और भारतीय संस्कृति से पूर्ण भी। ऐसे समय में आर्यसमाज के दो महान कर्णधार स्वामी श्रद्धानन्द व महात्मा हंसराज उदित हुए और उन्होंने भारतीय शिक्षा पद्धति को एक नया आयाम दिया। एक शिक्षित और सुसंस्कृत व्यक्ति ही शिक्षित एवं सभ्य समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सका है। लाला लाजपतराय ने अपनी पुस्तक आर्यसमाज में लिखा है कि "सब प्रयत्न और बलिदान व्यर्थ होते, यदि ठीक वक्त पर एक नौजवान अपना जीवनदान न देता, यह नौजवान हंसराज है।" महात्मा जी ने सर्वप्रथम लाहौर में डी०ए०वी० कालेज की स्थापना की। जिसने स्वतंत्रता आन्दोलन एवं शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति का सूत्रपात किया। यह कालेज डी०ए०वी० के विराट रूप का प्रथम स्वरूप था। इस कालेज के बाद डी०ए०वी० आन्दोलन का श्रीगणेश हो गया। चाहे वह स्वतंत्रता का क्षेत्र हो अथवा 1885 तथा 1899 का दुर्भिक्ष के रूप में प्राकृतिक आपदा या आर्य समाज का प्रचार क्षेत्र, डी०ए०वी० स्वयंसेवकों व विद्यार्थियों ने धूम मचा दी। महात्मा जी स्वयं आगे-आगे रहते और सेवाकार्य करते और निरंतर प्रेरणा देते।

महात्मा जी को विश्वास था कि जब तक आर्य जाति तें नव चैतन्य का संचार नहीं होगा, तब तक हम न तो आजादी पा सकेंगे और न ही आत्मिक तथा सामाजिक विकास कर सकेंगे। महात्मा हंसराज ने दलितोद्धार, विधवा विवाह, शिक्षा प्रसार, ब्रह्मचर्य आदि पर विशेष बल दिया। सन् 1919 में अमृतसर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस अवसर पर समाज सुधार आन्दोलन का आयोजन हुआ, जिसके प्रधान महात्मा हंसराज निर्वाचित हुए। अपने अभिभाषण में उन्होंने कहा "हमारी सामाजिक पद्धति बहुत गिर चुकी है .... इन त्रुटियों का कारण हमारा प्राचीन आदर्शों को भूल जाना और समय के संकेतों को न समझना है...... हमारी निर्बलता का दूसरा कारण ब्रह्मचर्य का अभाव है। बाल विवाह अभी तक जारी है। ..... महर्षि दयानन्द ने इसके विरुद्ध आवाज उठायी, तब जाकर यह काम हुआ। आज के ढर्रे की जात-पात हमारी राह की बाधा है. ....दलित जातियों का प्रश्न टेढ़ी समस्या बना हुआ है। इस अभिभाषण में अन्तिम वाक्य ध्यान देने योग्य है। .... यदि आर्य समाज सुधार कार्य में सफल हो जाए, तो हम संसार को स्वर्ग बना सकते हैं।"

महात्मा जी का स्वप्न था कि राजा के महल से लेकर गरीब की झोंपडी तक शिक्षा की ज्योति का प्रकाश हो। तभी हम महान राष्ट्र के निर्माण में सोच सकते हैं। वे शिक्षा को अनिवार्य एवं नि:शुल्क करने के पक्षधर थे। सन् 1908 में उन्होंने कहा कि "शिक्षा केवल अमीरों के लिए नहीं होनी चाहिए, बल्कि गरीब तथा निस्सहाय व्यक्तियों के लिए भी शिक्षा उतनी ही आवश्यक है।"

नव शिक्षा प्रणाली के संदेशवाहक, आर्य समाज के ओजस्वी उपदेशक, समाज सेवी महात्मा हंसराज का सम्पूर्ण जीवन तप और त्याग से युक्त होकर महर्षि के मिशन को पूरा करने में समर्पित हो गया।

मोबा. : 09412634672

thearyasamaj.org

एमडीएच वेद अनुसन्धान केन्द्र के शिलान्यास समारोह के अवसर पर २००८ कुण्डीय राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ का एक विहंगम दृश्य- केसरी।

वैदिककालीन महान परम्परा का स्मरण करा गया

केरल का भव्य राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ

दो हजार आठ कुण्डीय यज्ञ बना आकर्षण का प्रमुख केन्द्र

अर्जुन देव चड्ढा
केरल

कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन तथा दिल्ली सभा के संयुक्त तत्वावधान में वेदाश्रम के इस शिलान्यास समारोह का सर्वप्रमुख आकर्षण का कोई केन्द्र रहा तो वह था राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ। शिलान्यास समारोह होते हुए भी इसने वैदिक कालीन यज्ञ सत्रों का स्मरण करा दिया।

राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ के इस अवसर पर 2008 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के प्रारंभ से पूर्व यज्ञ में यज्ञमान बनने के लिए लोग पंक्तिबद्ध होकर विशेष काउण्टरों पर अपना रजिस्ट्रेशन करा रहे थे। इस यज्ञ का ब्रह्मा कौन बने तो उपस्थित सन्यासी परिषद् ने निर्णय दिया कि जो पिछले ग्यारह वर्षो से लगातार लोगों को संध्यावंदन एवं यज्ञ सिखला रहे हैं वे आचार्य राजेश ही ब्रह्मापद के अधिकारी हैं।

इस प्रकार आचार्य राजेश के ब्रह्मत्व में यह 2008 महानुभावों ने एक साथ राष्ट्र समृद्धि यज्ञ प्रारंभ किया। यज्ञ के पूर्व गुरूवंदन सूक्त, भाग्य सूक्त तथा संगठन सूक्त का पाठ किया गया। पश्चात् वैदिक संध्या के साथ यज्ञ का प्रारंभ हुआ। यज्ञ में ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रों के पश्चात् छोटे दीपक से बड़ा दीपक जलाया गया। यज्ञमानों ने समिधाधान मंत्रों में अत्यंत भावपूर्ण समर्पण के साथ समिधाओं को हृदय से लगा कर यज्ञ में आहुती दी।

यज्ञ में यज्ञमान बना प्रत्येक व्यक्ति एक जैसी भारतीय वेशभूषा में था। पुरूषों ने धोती व उत्तरीय पहना हुआ था जबकि महिलाओं ने गोल्डन कशिदाकारी युक्त श्वेत साडी पहन रखी थी। वस्त्रों का यह एकरूपता दिव्यता का स्मरण करा रही थी कि श्वेत वस्त्रों के समान जीवन भी उदात्त भावों से श्रेष्ठ बने। यज्ञ में प्रत्येक यजमान के लिए पृथक–पृथक तांबे के यज्ञ कुण्ड थे। सभी के लिए छोटा दीपक, बड़ा दीपक, समिधा, सामग्री, घी, यज्ञपात्र थे जो स्वयं यजमान लेकर आये थे। यज्ञ के प्रति यह उनकी अगाध श्रृद्धा का परिचायक है।

यज्ञ समापन के उपरान्त मलयालम भाषा में यज्ञ प्रार्थना एवं विश्वकल्याण की कामना की गई। इस यज्ञ की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसमें बच्चे एवं बुजुर्गो के अतिरिक्त 80 प्रतिशत युवा दम्पत्तियों ने आहुतियां दी।

300 के लगभग स्वंय सेवक इस महान राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ में अपनी सेवाऐं दे रहे थे उनके कर्तव्य के प्रति समर्पण को बारम्बार प्रणाम। यज्ञ के अंत में "होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से" भजन गाकर यज्ञ के भौतिक एवं आध्यात्मिक महत्व को बतलाया गया। लगभग 5000 नर–नारियों ने इस महान यज्ञ में भाग लिया। सबके लिए भोजन की व्यवस्था की गई थी।

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से
जल्दी प्रसन्न होते है भगवान यज्ञ से

इस भक्तिगीत से गुंजित हो उठा परिसर

thearyasamaj.org

महाशय धर्मपाल 'एमडीएच' वेद अनुसंधान केन्द्र, केरल

राष्ट्र समृद्धि यज्ञ व शिलान्यास समारोह की झाँकियाँ...(दो)

विद्वानों का अभिनन्दन करते महाशय जी

'भूयस्य शरदः शतात्' की कामना के साथ महाशय जी का स्वागत करते मनीषि

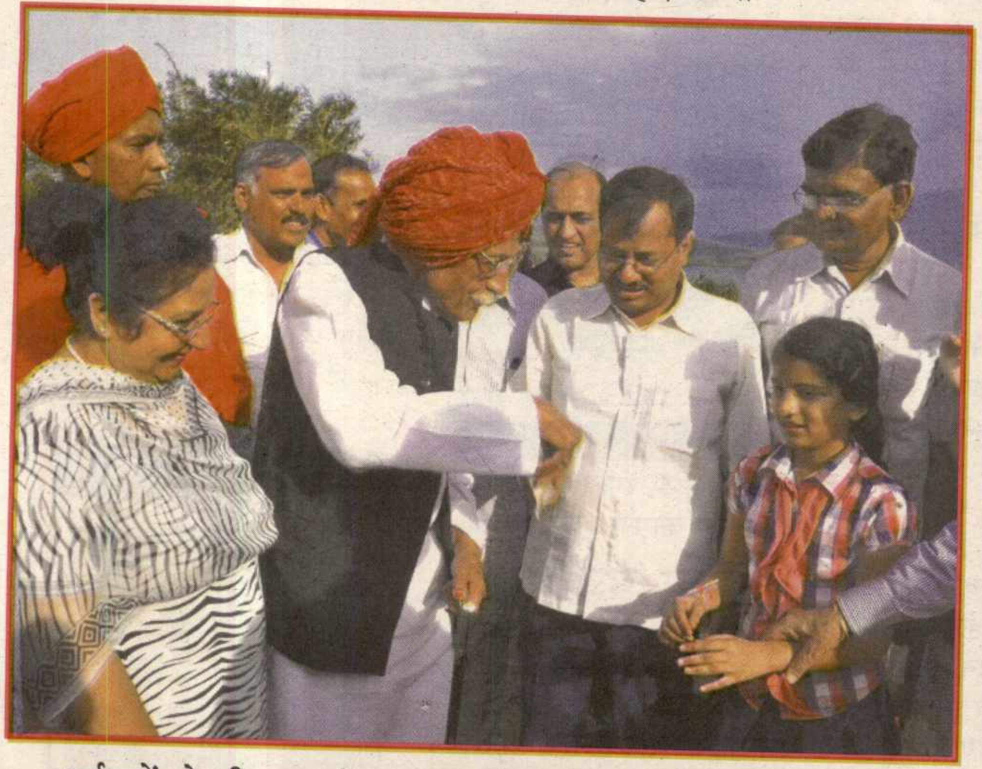

आर्यजनों के बीच प्रफुल्लित मुद्रा में सुप्रसिद्ध उद्योगपति महाशय जी

महाशय जी का स्वागत करते गणमान्यजन

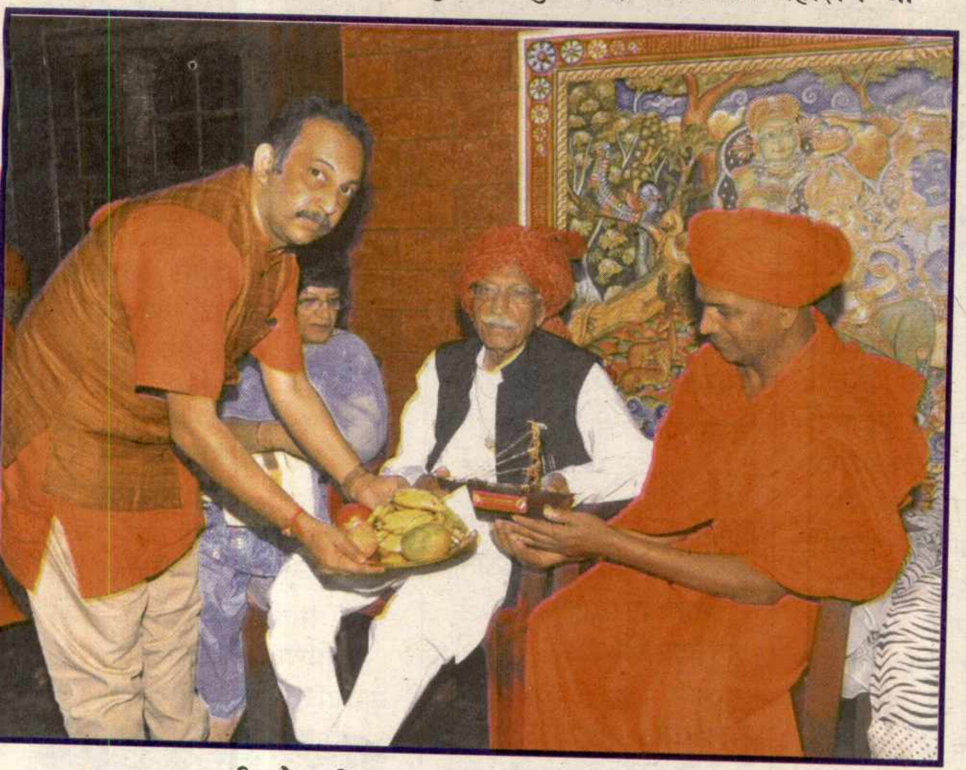

महाशय जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते वैदिक मनीषि

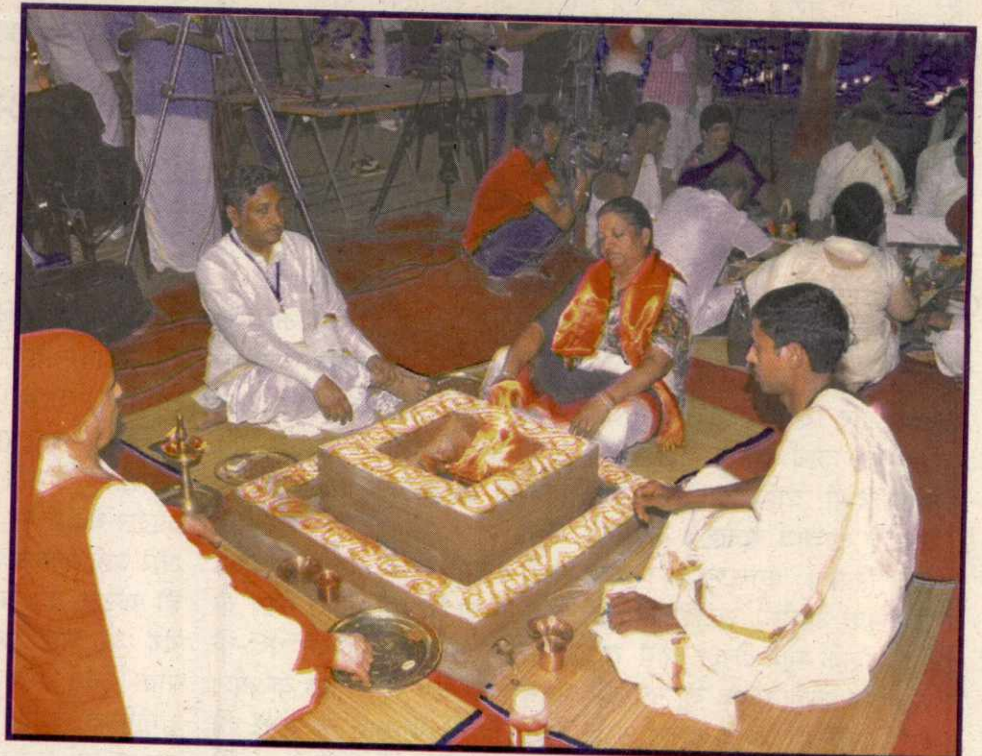

श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ करते श्रद्धालु यजमान

thearyasamaj.org

उद्‌बोधन की मुद्रा में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य व उपस्थित आर्यजन- केसरी।

केरल में आर्य जनों ने लिया दृढ़ संकल्प

वैदिक धर्म का करेंगे द्रुतगति से प्रचार

विनय आर्य
दिल्ली

आर्य समाज का अपनी स्थापना से एक ही सबसे बड़ा उद्‌देश्य रहा है मानव मात्र को वेद तथा वैदिक संस्कृति का ज्ञान कराना। इसलिए वह देश के प्रत्येक कोने में पहुंचकर लोगों की चेतना को जागृत कर ऋषियों की पावन वैदिक संस्कृति से जोड़ने का सत्कार्य करता रहा है। इसी पृष्ठभूमि में देवभूमि केरल में लोगों को महर्षि दयानन्द की मान्यताओं से अवगत कराने तथा साम्यवाद और ईसाईयत के बढ़ते प्रभाव से अपनी स्वयं की संस्कृति को भूलते जा रहे केरल वासियों तक वेदों का दिव्य ज्ञान पहुंचाने के लिए दीर्घकाल से अनेक प्रयास किये जा रहे थे जिसमें अनेक आर्य विद्वानों का योगदान रहा है– आचार्य नरेन्द्र भूषण जी को इसके लिए हमेशा याद किया जाएगा। उन्हीं से प्रेरणा पाकर आचार्य एम. आर. राजेश ने अपने जीवन को वेद की आज्ञाओं को जन–जन तक पहुंचाने के लिए समर्पित कर दिया तथा उनके कार्य का ऐसा प्रभाव हुआ कि आज केरल में वेद के मन्त्र पुनः घर–घर में उच्चारित होते हैं तथा प्रातः–सायं अग्निहोत्र की अग्नि घर–घर में प्रज्वलित होने लगी। कार्यो को आगे बढ़ाने के लिए वर्तमान का 500 गज का भवन भी प्रर्याप्त नहीं था। अतः अधिक साधन की आवश्यकता है।

इस अवसर पर महाशय धर्मपाल आर्य चेयरमेन एम.डी.एच. मसाले के करकमलों से नव संकल्पित वेदाश्रम भवन का शिलान्यास किया गया। विधिवत वेदमंत्रों के उच्चारण के साथ संकल्प व्यक्त किया गया कि आगामी 15 अगस्त 2015 को इस भवन का लोकार्पण समारोह भी इसी प्रकार से भव्य रूप से मनाया जाए। कोझिकोड का यह वेदाश्रम शिलान्यास समारोह कोई साधारण भवन के शिलान्यास की तरह नहीं था। इसमें भावना छिपी थी संस्कृति के संरक्षण की, वेदों के पुनरूद्धार की, ईसाई, मुस्लिम और कम्युनिस्ट विचारों के जबरदस्त प्रभाव के कारण दबाई, कुचली जा रही भारतीय अस्मिता की रक्षा की। और यही कारण था कि विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने उद्‌बोधन में शंकराचार्य की इस जन्मभूमि में मथुरा से निकली देव दयानन्द की ज्योति को घर–घर में पहुंचाने का संकल्प व्यक्त किया।

अध्यक्षता आचार्य एम. आर. राजेश ने की। उन्होंने पिछले एक दशक से अपना तन, मन एवं धन सब कुछ ऋषि के इस मिशन के पीछे समर्पित कर दिया है। मलयालम में दिये गये उनके स्वागत भाषण की प्रत्येक पंक्ति पर लगातार तालियों की गड़गड़ाहट हो रही थी।

वेदाश्रम भवन के शिलान्यास समारोह के अध्यक्ष

एक क्रांतिदर्शी व्यक्तित्व आचार्य राजेश

केरल में वेदाश्रम की स्थापना का यह समारोह जितना भव्य और दिव्य रहा उतना ही भव्य और दिव्य है इसके पीछे अहर्निश कार्य करने वाले एक क्रान्तिदर्शी व्यक्तित्व, जिनका नाम है आचार्य राजेश। कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक आचार्य राजेश विगत एक दशक पूर्व केरल आये तो देखा कि केरल में वेद का मतलब बाइबिल है वैदिक शब्द का अर्थ पादरी है। बस यहीं से भीष्म प्रतिज्ञा कर संकल्प लिया कि केरल की नई पीढ़ी वेद को वेद कहेगी, वैदिक को वैदिक कहेगी, पादरी और बाइबिल नहीं और लग गये महर्षि दयानन्द की मान्यता के अनुरूप वेद प्रचार के कार्य में।

इसके साथ ही शुरू हुआ महाभियान जिसमें जाति लिंग के भेद को भुलाकर सबको वेद के वास्तविक रूप से अवगत कराया। बिना किसी भेदभाव के सभी को परमात्मा का पुत्र–पुत्रियां मानते हुए वैदिक संध्या, हवन सिखलाना प्रारंभ किया। शाकाहार को बढ़ावा दिया। सेवा करके लोगों को जोड़ा। बतौर आचार्य राजेश के अनुसार इसके लिए मातृशक्ति ने गांव–गांव, घर–घर जाकर वेद प्रचार का कार्य किया और यही कामना है कि अतिशीघ्र ही केरल का प्रत्येक नागरिक वेद के सही अर्थ को समझ सके। वेद प्रचार मे रत इस तपोनिष्ठ व्यक्तित्व को शत्‌श प्रणाम एवं धन्यवाद।

आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रिंटर्स, अमरोहा
द्वारा मुद्रित तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा द्वारा प्रकाशित बहुमूल्य व जीवनोपयोगी पुस्तकें आज ही मंगाएं

४८ पृष्ठ, रंगीन आवरण, उत्तम कागज युक्त पुस्तक

अर्चना यज्ञ पद्धति
मूल्य– 10 रु. (700 रु. सैंकड़ा)

हिन्दी के प्रचार–प्रसार में आर्य समाज का योगदान
अपने आर्यसमाज, स्कूल-कालेज के उत्सवों, विशेष पर्वो, विभिन्न समारोहों में वितरण करने हेतु आज ही मंगाएं।
मूल्य : दो सौ रु० सैंकड़ा

अवश्य पढ़िए– आज ही मंगाईये संग्रहणीय पुस्तकें
◆ रामायण का वास्तविक स्वरूप
मूल्य- २०/-
◆ यज्ञ और पर्यावरण
मूल्य : 3 रु. (200 रु. सैंकड़ा)

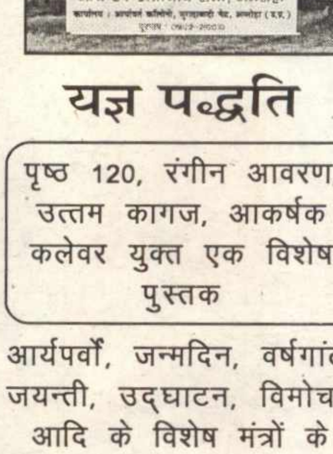

यज्ञ पद्धति
पृष्ठ 120, रंगीन आवरण, उत्तम कागज, आकर्षक कलेवर युक्त एक विशेष पुस्तक

आर्यपर्वों, जन्मदिन, वर्षगांठ, जयन्ती, उद्‌घाटन, विमोचन आदि के विशेष मंत्रों के साथ दैनिक व विशेष यज्ञ पर सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रमाणित यज्ञ पद्धति पर आधारित एक श्रेष्ठ पुस्तक।
मूल्य : ३५ रुपये

समस्त पुस्तकें बिक्री हेतु निम्न पते पर उपलब्ध हैं
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान, आर्य उपप्रतिनिधि सभा
कार्यालय : आर्य्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ०प्र०),
दूरभाष : 05922-262033
चलभाष- 09758833783, 09412139333

thearyasamaj.org

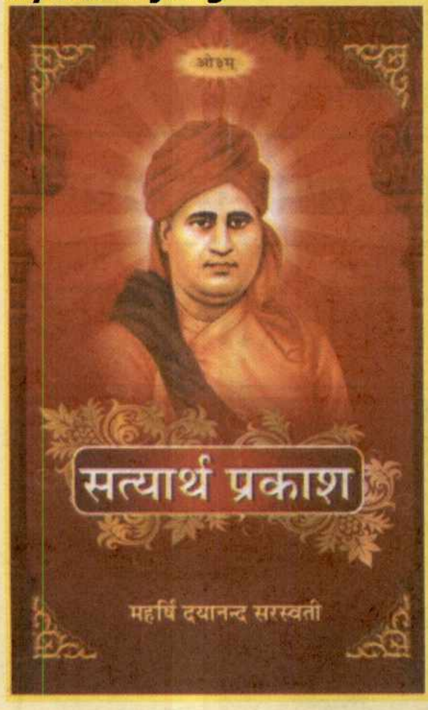

ऋग्वेद ॥ ओ३म् ॥ यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

पहली बार लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

- ताकि आगामी पाँच वर्षों में विश्व के कोने-कोने तक उन सभी महानुभावों के घरों तक महर्षि के इस क्रांतिकारी ग्रन्थ को पहुँचाया जा सके, जो आर्यसमाजी हैं अथवा जिनकी आस्था ऋषिवर दयानन्द के विचारों में है।
- ऋषि का ऋण हम सभी पर है। इससे उऋण होने के लिए इस 'मिशनरी' योजना में आप भी अपनी पुनीत भागीदारी कर सकते हैं।
- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। इसका पहला संस्करण इसी वर्ष अक्टूबर माह में ऋषि निर्वाण दिवस पर आ रहा है।

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' के अंत में प्रकाशित किये जाएंगे।

॥ योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ॥

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं। कोई भी महानुभाव कम से कम रु0 500/- तथा इससे अधिक लाखों तक भेंट करके इस मिशन को गति प्रदान कर सकते हैं। न्यूनतम 1000/- रुपये या अधिक राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की उतनी ही प्रतियों में उन महानुभावों के चित्र भी छपेंगे।
- प्रत्येक आर्यसमाज न्यूनतम रु0 3100/- भेंट कर सकता है। रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी। आर्यसमाज इन प्रतियों को अपने सदस्यों के घर-घर तक पहुंचा सकता है।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- या 500/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 व 05 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।
- सभी महानुभाओं के रंगीन फोटो तथा नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' के अन्त में उनकी धनराशि के अनुसार **'सत्यार्थप्रकाश निधि में सहयोगी दानदाता-महानुभाव'** शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाएंगे, साथ ही, उन सभी महानुभावों के रंगीन चित्र 'आर्यावर्त केसरी' में भी 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि' स्तंभ के अन्तर्गत नियमित रूप से प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकार आपके पावन सहयोग की कीर्ति विश्व भर में कहीं भी गुंजायमान हो सकेगी।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 18 प्वाइंट (सभी आयुवर्ग के महानुभावों द्वारा सुगमतापूर्वक पठनीय)
5. सत्यार्थ प्रकाश के आवरण पृष्ठ के अन्दर 'प्रेमोपहार' की एक पट्टिका रहेगी, जिसका उपयोग किसी को उपहार स्वरूप निःशुल्क भेंट करने के लिए किया जा सकेगा। उस पट्टिका पर पाने वाले तथा भेंटकर्ता के नाम व पते के लिए स्थान रिक्त रहेगा।
6. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे, जैसे- ■ महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि, बोधप्राप्ति स्थल; शिवालय व अन्य सम्बन्धित स्थलों के चित्र- टंकारा। ■ महर्षि दयानन्द दीक्षास्थली- मथुरा। ■ आर्य समाज- कांकरवाड़ी, मुम्बई। ■ पाखण्डखण्डिनी पताका स्थली (वैदिक मोहन आश्रम), हरिद्वार ■ राजा जयकिशनदास की कोठी, मुरादाबाद ■ नवलखा महल, उदयपुर ■ वैदिक यंत्रालय, अजमेर ■ महाराजा जोधपुर का महल, जोधपुर ■ महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली, भिनाय कोठी, अजमेर आदि के चित्र।
7. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ होगी तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन का लागत मूल्य लगभग रु0 100/- प्रति ग्रन्थ होगा।

उपर्युक्त के सन्दर्भ में आपके बहुमूल्य सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

: सभी आर्य बन्धुओं से सादर निवेदन :

■ प्रत्येक आर्य समाज व आर्य परिवारों के घर पर 'सत्यार्थ प्रकाश' होना चाहिए, ताकि हमारे बच्चे भी सरलतापूर्वक महर्षि की विचारधारा से परिचित हो सकें। ■ शुभ विवाहों, जन्मोत्सवों, वैवाहिक वर्षगांठों, सेवानिवृत्ति, उद्घाटन, शिलान्यास व ऐसे ही अन्य अवसरों पर पुरस्कारस्वरूप 'सत्यार्थप्रकाश' भेंट करें। ■ विविध प्रतियोगिताओं व कार्यक्रमों के माध्यम से 'सत्यार्थप्रकाश' घर-घर पहुंचाएं तथा विभिन्न संस्थानों, स्कूल-कालेजों व पुस्तकालयों को अपनी ओर से 'सत्यार्थप्रकाश' निःशुल्क अथवा सशुल्क भेंट करें।

: अनुरोध :

- ➔ कृपया 'सत्यार्थ प्रकाश' की प्रतियों के अपने ऑर्डर्स अभी से बुक कराकर इस प्रकाशन महायज्ञ में अपनी ओर से पावन आहुति प्रदान करें।
- ➔ कृपया अपना ऑर्डर निम्न पते पर भेजें तथा सहयोग/ राशि भी इसी पते पर भेजकर ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' को जन-जन तक पहुंचाने का पुण्य कार्य करें/ करवाएं। सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' अमरोहा के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं0 30404724002 अथवा सिंडिकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता संख्या : 88222200014649 में भी सीधे जमा करायी जा सकती है। इसकी सूचना पत्र अथवा चलभाष द्वारा हमें अवश्य दें। ताकि यथासमय पावती रसीद आपकी सेवा में प्रेषित की जा सके। धन्यवाद,

: विशेष :
कोई भी धनराशि अग्रिम भेजना ही आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित कर दिये जाएंगे। धन्यवाद

पता- 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रकाशन निधि (द्वारा - डॉ. अशोक कुमार आर्य)

आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इण्टर कालेज, अमरोहा-244221

Ph. : 05922-262033, 09412139333, 09758833783, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद अथर्ववेद

thearyasamaj.org

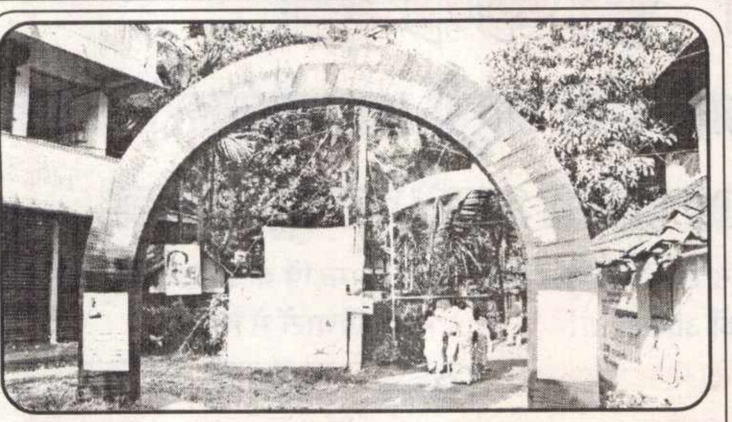

वेदाश्रम भवन के शिलान्यास एवं राष्ट्र समृद्धि यज्ञ की भावपूर्ण स्मृतियाँ

पेट भरा पर मन नहीं

चूंकि कार्यक्रम केरल में था और मन में यह धारणा पूर्व से ही बैठी हुई थी कि दक्षिण में तो रोटी मिलना मुश्किल है जितने दिन रुकेंगे केवल दाल–चावल से काम चलाना होगा। किन्तु जब इस समारोह के अतिथि सत्कार को देखा तो पूर्व की सारी धारणाएं ध्वस्त हो गई। प्रातःकाल के नाश्ते में इडली, बडा, मेदुबड़ा, सांभर, नारियल की चटनी, पुलाव ने उत्तर भारतीय भोजन को विस्मृत करा दिया। मध्याहन में जब केले के पत्तों पर कयापातोरन, कोजीकोड हलवा, पायसा, केला फ्राई, चना मीठा, पूरी, चटनी, भाजी (केला, गाजर, आलू व अन्य मिक्स सब्जी) रोटी, दाल के साथ खाई तो आत्मा तृप्त हो गई। इतने स्वादिष्ट भोजन के उपरान्त तो रहा नहीं गया और आचार्य राजेश को कह दिया कि आचार्य जी पेट भरा है पर मन नहीं।

अभूतपूर्व स्वागत

समारोह में पधारे प्रत्येक अतिथि का तुलसी के पत्तों की माला पहनाकर स्वस्तिवाचन के मंत्रों के साथ केरलीय ढोल नगाड़ों की थाप पर आत्मीयता पूर्वक स्वागत किया गया। ऐसा स्वागत लेखक ने इससे पूर्व कभी नहीं देखा। बस से उतरते ही मलयालम की भूमि पर हिन्दी में नमस्ते का श्रवण आनन्दातिरेक से हृदय को पूरित कर रहा था। मण्डप द्वार पर स्थानीय निवासियों एवं अग्निहोत्र करने वालों का रजिस्ट्रेशन किया जा रहा था जिसका प्रबन्ध अत्युत्तम था।

विश्वव्यापी आर्यसमाज के समाचार
आर्यसमाज की आधिकारिक वेबसाइट पर

www.aryasamaj.com

अपनी संस्था की सूचनाएं भी अपलोड कर सकते हैं।
अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com

मकर सौर संक्रान्ति पर होगा अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन

मेरठ। आगामी 13-14 जनवरी को मकर सौर संक्रान्ति के अवसर पर अखिल भारतीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा, जिसका विषय होगा ''वैदिक वाङ्मय में देवताओं का स्वरूप''।

स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला, मेरठ (उ0प्र0) में इस राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु विद्वानों से उनके वैदुष्यपूर्ण लेख (Walkman Chanakaya 901) में टंकित कराकर pavamani1986@gmail.com पर मेल करने तथा लेख का प्रकाशित प्रारूप (Printout) गोष्ठी में पढ़ने हेतु साथ लाने का निवेदन किया गया है। बताया गया कि Soft एवं Hard Copy उपलब्ध होने पर ही स्तरीय लेख 'पावमानी' शोध पत्रिका में प्रकाशित किये जाएंगे।

मुद्रण/प्रकाशन सुविधा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध।

–व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, श्रीराम इं० कालेज के पीछे, अमरोहा, फोन : (05922–262033/ 09758833783/ 08273236003)

महाशय धर्मपाल पुनः बने केन्द्रीय सभा के प्रधान

स्थिर निधि हेतु २१ लाख की राशि भेंट

दिल्ली। दिल्ली की समस्त अर्यासमाजों एवं आर्यसंस्थाओं की केन्द्रीय संस्था आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का साधारण अधिवेशन एवं निर्वाचन २८ जून को आर्य समाज कीर्ति नगर में सम्पन्न हुआ। सर्व सम्मति से आर्यरत्न महाशय धर्मपाल को सभा का प्रधान चुना गया।

निर्वाचन अधिकारी ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य ने जैसे ही निर्वाचन की कार्यवाही प्रारम्भ की, प्रधान का नाम आते ही समस्त प्रतिनिधियों ने हाथ उठाकर महाशय धर्मपाल जी का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तुत किया जिसका अनुमोदन सैंकड़ों प्रतिनिधियों ने हाथ उठाकर किया।

ब्रह्मचारी राजसिंह ने महाशय धर्मपाल का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि महाशय जी केवल आर्थिक सहयोग ही नहीं देते हैं। अपितु उन संस्थाओं की निरन्तर प्रगति की जानकारी भी प्रतिदिन लेते रहते हैं। उनके जैसा निष्ठावान, कर्तव्यनिष्ठ, समाजसेवी परोपकारी, नौजवान, कर्मठ कार्यकर्ता आर्यसमाज को मिलना कठिन है।

पुनः प्रधान निर्वाचित किए जाने पर महाशय धर्मपाल ने दिल्ली की सभी आर्यसमाजों से पधारे प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरा जीवन आर्यसमाज का है। मैंने अपने आपको उसी दिन आर्यसमाज को समर्पित कर दिया था जब मेरे पिता महाशय चुन्नीलाल जी मुझे उंगली पकड़कर आर्यसमाज लेकर जाते थे। मुझे आर्यसमाज का कार्य करने की प्रेरणा एवं संस्कार उन्हीं से मिले। उन्होंने आगे कहा कि आप सब मुझे ऐसा आशीर्वाद दें कि मैं और भी अधिक गति के साथ आर्यसमाज का कार्य कर सकूँ।

उन्होंने आर्यसमाज के प्रसार–प्रचार के लिए २१ लाख रूपये की राशि से महाशय धर्मपाल एमडीएच के नाम से स्थिर निधि बनाने की भी घोषणा की।

डॉ० लोखंडे का कार्य प्रेरणादायक : वाघमारे

लातूर (महाराष्ट्र)। डॉ0 चन्द्रशेखर लोखंडे ने प्रतिकूल परिस्थितियों में गुरुकुलीय शिक्षा प्राप्त कर साहित्य सेवा एवं सामाजिक कार्यों में जो अपना योगदान दिया है, वह युवकों को प्रेरणा देने वाला है। ये विचार पूर्व सांसद तथा साहित्यकार जनार्दन वाघमारे ने डॉ0 चन्द्रशेखर लोखंडे के अभिनन्दन समारोह पर व्यक्त किये।

लातूर के पत्रकार भवन में महाराष्ट्र दिवस के शुभ अवसर पर डॉ0 चन्द्रशेखर लोखंडे का उनकी आयु के 65 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में स्मृति चिह्न, सम्मान-पत्र तथा एक लाख रुपयों की गौरव निधि प्रदान कर नागरिक सत्कार किया गया। इसी समारोह में राष्ट्रधर्मी डॉ0 लोखंडे के गुण-गौरव में प्रकाशित अभिनन्दन ग्रंथ का भी लोकार्पण पूर्व सांसद जनार्दन वाघमरे एवं डॉ0 सोमदेव शास्त्री तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द (हरिश्चन्द्र गुरु जी) के करकमलों द्वारा किया गया। यह अभिनन्दन ग्रन्थ अखिलेश आर्येन्दु के सम्पादकत्व में तथा प्रभाकर देव के निर्देशन में श्री घूड़मल प्रह्लाद कुमार आर्य प्रकाशन, हिन्डौन सिटी, राजस्थान से प्रकाशित किया गया। इस समारोह में उनकी पत्नी संध्या लोखंडे तथा माता त्रिवेणी बाई भी व्यासपीठ पर विराजमान थीं। नागरिकों की ओर से समर्पित एक लाख रुपयों की गौरव राशि में 25 हजार अपनी ओर से जोड़कर सवा लाख की राशि डॉ0 चन्द्रशेखर लोखंडे ने 'संस्कृति रक्षक मंच' संस्था को समर्पित की। यह संस्था भारतीय वैदिक संस्कृति और सुपरंपराओं का संरक्षण और संवर्द्धन करने में तत्पर रहती है। सत्कार का उत्तर देते हुए डॉ0 लोखंडे ने कहा कि मैंने जीवन के अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों को पार कर, आज इस सामाजिक एवं साहित्य के शिखर तक पहुंचने की कोशिश की है।

पं0 नरेन्द्र जी एवं प्रकाशवीर शास्त्री तथा आचार्य नन्दकिशोर शास्त्री जैसे महानुभावों की सहायता से मैं गुरुकुलीय शिक्षा पूर्ण कर सका। इन्हीं की अनुकम्पा से मैं गुरुकुलीय ज्ञान को समाजोपयोगी बनाने में सक्षम हो सका। मेरी संपूर्ण शिक्षा गुरुकुल घटकेश्वर हैदराबाद और गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में इन्हीं के सहयोग से हो सकी। मैं इस ऋण को कभी नहीं चुका पाऊंगा। मुझे इस नागरी सत्कार से देव दयानन्द के कार्यों को पूरा करने की शक्ति प्राप्त होगी। मैंने 'हैदराबाद मुक्ति संग्राम इतिहास' इन्हीं प्रेरणाओं से प्रेरित होकर लिखा है। इस अवसर पर प्रसिद्ध विद्वान वक्ता डॉ0 सोमदेव शास्त्री ने हैदराबाद की आजादी में आर्यों के योगदान पर तथा उस संबन्ध में डॉ0 लोखंडे के योगदान पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम का प्रस्तावित भाषण विजय दबडगांवकर तथा सूत्र संचालन विवेक सौताडेकर ने किया। कार्यक्रम के आयोजन में गौरव समारोह समिति के संयोजक अशोक तोगरे, दत्तात्रैय मोरे, पं0 योगीराज भारती, प्रकाश हेरकर, जयप्रकाश दगडे (संपादक पुण्य नगरी) प्रा0 नरदेव गुडे, शैलेश लोखंडे, देवकते, विश्वनाथ होळकूंदे, विजयकुमार दबडगांवकर, साईनाथ कबले आदि ने सहयोग किया।

इस अवसर पर गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्राचार्य डॉ0 केशव प्रसाद उपाध्याय, साहित्यकार, डॉ0 सुशील कुमार त्यागी, डॉ0 अभयदेव शास्त्री, डॉ0 सुरेश चन्द्र त्यागी, डॉ0 दिनेश चन्द्र शास्त्री, एस0पी0 सिंह आदि ने भी डॉ0 लोखंडे को शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

सभी आर्यों से अनुरोध है कि वे अपनी सन्तानों को महर्षि दयानन्द की इच्छानुसार हिन्दी की शिक्षा अवश्य दिलाएं।

हिन्दी दिवस १४ सितम्बर

thearyasamaj.org

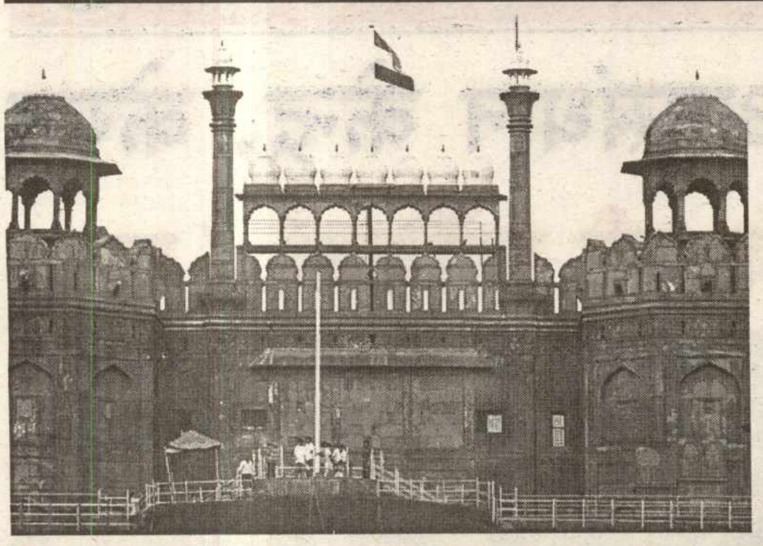

लाल किले की प्राचीर से प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी का ऐतिहासिक भाषण

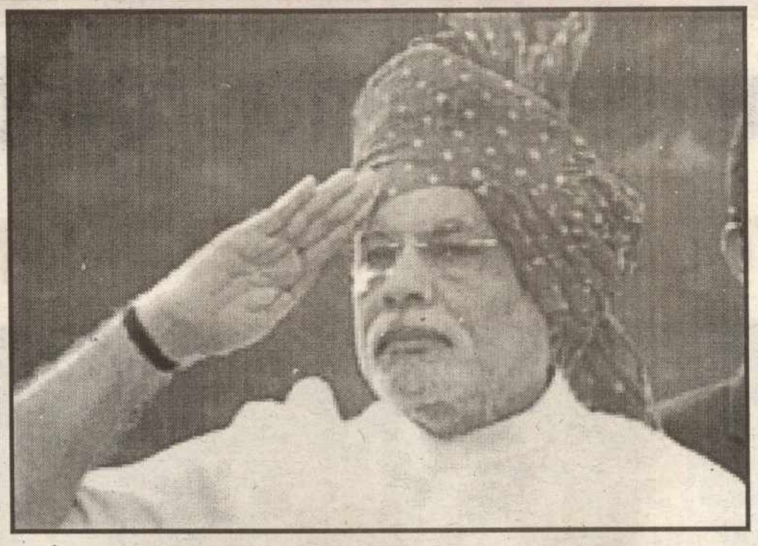

हो एक लक्ष्य, एक मन, एक दिशा, एक गति और एक मति

नई दिल्ली। गुजरात के करीब साढ़े बारह वर्षों तक मुख्यमंत्री रहने के बाद प्रधानमंत्री पद की बागडोर संभालने वाले नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि वह दिल्ली के लिए 'आउटसाइडर' हैं और दिल्ली की दुनिया के इंसान नहीं हैं।

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री के रूप में अपने पहले संबोधन में मोदी ने कहा कि मैं दिल्ली के लिए आउटसाइडर हूं, मैं दिल्ली की दुनिया का इंसान नहीं हूं। मैं यहां के कामकाज को नहीं जानता। मैं यहां की एलीट क्लास से बहुत अछूता रहा हूं। उन्होंने कहा कि लेकिन एक बाहर के व्यक्ति ने, एक आउटसाइडर ने दिल्ली आ करके पिछले दो महीने में, एक इनसाइडर व्यू लिया, तो मैं चौंक गया। मोदी ने कहा कि उनकी इस बात को राजनीति के तराजू से ना तौला जाए। उन्होंने कहा कि जब दिल्ली आकर उन्होंने एक इनसाइडर व्यू देखा और जो अनुभव किया, उससे वह चौंक गए। ऐसा लगा कि जैसे एक सरकार के अंदर ही दर्जनों अलग-अलग सरकारें चल रही हैं और हर एक की जैसे अपनी अपनी जागीरें बनी हुई हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि मुझे बिखराव नजर आया, मुझे टकराव नजर आया। एक विभाग दूसरे विभाग से भिड़ रहा है और यहां तक भिड़ रहा है कि उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाकर एक ही सरकार के दो विभाग आपस में लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि ये टकराव, ये बिखराव, एक ही देश के लोग। हम देश को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं? और इसीलिए मैंने कोशिशें आरंभ की हैं उन दीवारों को गिराने की। मैंने कोशिश आरंभ की है कि एकरस हो सरकार, एक लक्ष्य, एक मन, एक दिशा, एक गति, एक मति। इस मुकाम पर हम देश को चलाने का संकल्प करें। हम चल सकते हैं।

बेटियों की चिन्ता

बलात्कार की बढ़ती घटनाओं को शर्मनाक बताते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि सिर्फ बेटियों पर बंदिश लगाने वाले मां-बाप अपने बेटों पर भी तो जरा नजर रखें।

उन्होंने कहा कि आपके घर में बेटी 10-12 साल की होती है तो आप उससे पूछते हैं कि कहां जा रही हो, कब तक लौटोगी, पहुंचकर फोन करना, पर क्या कोई बेटे से पूछता है कि वह कहां जा रहा है, उसके दोस्त कौन हैं क्योंकि बलात्कार करने वाला किसी का तो बेटा है। बेटियों पर जितने बंधन डालते हो, बेटों पर डालकर तो देखो। उन्होंने बेटियों को भी समान अवसर देने की हिमायत करते हुए कहा कि इन बुराइयों पर अंकुश लगाने में कानून अपना काम करता है, लेकिन समाज का भी दायित्व है कि वह इस दिशा में प्रयास करे। कन्या भ्रूण हत्या की निंदा करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि समाज में ऐसी सोच है कि बेटा होगा तो बुढ़ापे का सहारा बनेगा, लेकिन देखने में आता है कि पांच-पांच बेटे होने और बंगले होने के बाक्जूद मां बाप ओल्ड एज होम और वृद्ध आश्रम में रहते हैं। उन्होंने कहा कि बेटियों की बलि मत चढ़ाइए। जिनकी अकेली बेटी संतान के रूप में है तो वह अपने सपनों की बलि चढ़ा देती है, शादी नहीं करती और अपने मां बाप की सेवा करती है। मोदी ने कहा कि मां के गर्भ में बेटी की हत्या, ये कितना बड़ा अपराध है। इससे हमें मुक्ति पानी होगी। उन्होंने कहा कि हाल के राष्ट्र मंडल खेलों में हमारे खिलाड़ियों ने 64 पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया, लेकिन याद रखिए कि इनमें 29 पदक जीतने वाली बेटियां हैं।

thearyasamaj.org

महाशय धर्मपाल 'एमडीएच' वेद अनुसंधान केन्द्र, केरल

राष्ट्र समृद्धि यज्ञ व शिलान्यास समारोह की झाँकियाँ...(एक)

आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी यज्ञ वेदी पर ध्यानमग्न मुद्रा में

एमडीएच के स्वामी महाशय जी के साथ आचार्य जी व अन्य प्रसन्न मुद्रा में

महाशय जी को प्रतीक चिन्ह व स्मृति चिन्ह भेंट करते आर्यजन

महाशय जी के साथ मंचासीन आचार्य जी

ध्वजस्थल पर विराजमान महाशय जी व अन्य

thearyasamaj.org

हम कब बनेंगे ऋषि दयानन्द की जय बोलने के सच्चे अधिकारी?

हम लोग बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्हें गुरु के रूप में महर्षि दयानन्द जैसा तपस्वी ऋषि मिला। उन्होंने अपने अपार तप एवं तपस्या के बल पर वेद रूपी वाणी हमें प्रदान की, जिसे पूरा मानव जगत पढ़ सकता है, पढ़ा सकता है। ''स्त्री शूद्रो न धीयताम्'' स्त्री और शूद्र को वेद पढ़ने का कोई अधिकार नहीं वाली वार्ता को परिवर्तित करते हुए यह सिद्ध कर दिखाया कि वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का न केवल धर्म अपितु परम धर्म बताया। आर्य समाज ने न जाने कितने ही अनुसूचित एवं जनजाति युवकों को वेदज्ञान देकर पंडित बनने का गौरव प्रदान किया। आज जगह-जगह वेदमंत्रों के गान से यज्ञाग्नि प्रज्वलित हो रही है। हरिजनों को मन्दिरों में जाने का अधिकार दिलाया, उन्हें यज्ञोपवीत पहनाये और वेद पढ़ने का अधिकार दिया। महर्षि दयानन्द समाज के इस उपेक्षित वर्ग के मसीहा बनकर आये। संसार का एक भी सुधारक ऐसा नहीं, जिसने समाज को ऊंचा उठाने के लिए विष के प्याले पिये हों, पत्थर खाये हों, अपमान के कड़वे घूंट पिये हों और फिर भी मानव जाति को अमृत पिलाया हो। फिर भी यदि आज मानव जाति उनके उपकार को नहीं मानती, तो यह उसकी कृतघ्नता होगी।

महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में जो भी आया, वह कृतकृत्य हो गया। चाहे वह श्रद्धानन्द हो या लेखराम, गुरुदत्त हो या हंसराज। सभी सोने के रूप में दयानन्द के सम्पर्क में आते गये और कुन्दन बनकर निकलते गये। परन्तु आज हम उनके उत्तराधिकारी क्या उस ओर बढ़ रहे हैं? यदि नहीं तो क्यों? आर्यो! सेचो, विचारो। अपनी अन्तरात्मा में झांको। मैं भी झांकूं, तुम भी झांको, हम सभी झांकें। तभी तो हम ऋषि के ऋण से उऋण हो सकेंगे। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि हम दूसरों के दोषों को देखना चाहते हैं, परन्तु अपने नहीं। आइए, आज से हम निर्णय लें कि दूसरों के दोष देखने की बजाय अपने दोष देखने प्रारम्भ करेंगे।

आज धर्म घट रहा है। पाप और पाखण्ड बढ़ रहा है। आज कथा, प्रवचन, सत्संग मात्र धार्मिक मनोरंजन बन कर रह गये हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द के उत्तराधिकारी आर्यो! सोचो, क्या यह आडम्बर, पाखण्ड एवं ढोंग हमारी अकर्मण्यता के कारण नहीं हो रहा है। जब से हमने आर्यसमाज के प्रचार, प्रसार करने की बजाय फोटो खिंचवाना, नेताओं के स्वागत करना और कुछ भजन-संध्या करा देना ही आर्यसमाज के उत्सव का उद्देश्य बना लिया है, तभी से यह सब कुछ हो रहा है। वैदिक प्रचार एवं प्रसार लुप्त हो रहा है। तभी तो आज तथाकथित धर्मगुरु कूड़ा-करकट बेच रहे हैं। क्योंकि वह अपनी ऊंची दुकान लगाकर अपना कूड़ा-करकट बहुत महंगे दामों पर बेच रहे हैं और हम बढ़िया दुकानदार होते हुए अच्छा माल रखते हुए भी अपने वेदरूपी माल को लोगों के गले नहीं उतार रहे हैं। आइए आज इस विषय पर सोचें। आज के आर्यसमाजी वेदप्रचार के कार्य को प्रमुखता की बजाय विद्यालयों, औषधालयों, दुकानों, मैरिज ब्यूरो आदि चलाने में अधिक रुचि दिखा रहे हैं। यह कार्य तो कोई भी संस्था कर सकती है। परन्तु वेद प्रचार का कार्य केवल आर्य समाज ही कर सकता है। यही ऐसी संस्था है, जो उच्च स्वर से कहती है कि वेद की ज्योति जलती रहे। फिर यह कैसे जलेगी? इन विद्यालयों, औषधालयों, बारातघरों के चलाने से नहीं, बल्कि वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं प्रसार से जलती रहेगी। अतः आर्यो उठो, जागो और आज से एक प्रण लो कि आज हम विवादों, कुर्सियों के लोभ को तिलांजलि देकर महर्षि दयानन्द के स्वप्न 'वेद के प्रचार और प्रसार' में अपनी पूरी शक्ति जुटा देंगे। यदि हम ऐसा कर सके, तो हम महर्षि दयानन्द की जय बुलाने के सच्चे अधिकारी बन सकेंगे।

अतिथि सम्पादकीय- कन्हैयालाल वर्मा
-४/४५, शिवाजी नगर, गुड़गांव, हरियाणा
मोबा. : 09911197073

श्राद्ध तर्पण का वास्तविक स्वरूप

सुमन कुमार 'वैदिक'

हमारे जिन कार्यों से देवता, ऋषि, माता, पिता सुखी हों या तृप्त हो जाएं, पितरों के लिए जो कार्य सेवा, श्रद्धा के भाव से किया जाए, वही श्राद्ध और तर्पण कहलाता है। आजकल अश्विनी माह के कृष्णपक्ष को पितृ पक्ष कहते हैं। जिसे अशुभ पक्ष मानकर मृतक पितरों के नाम पर पण्डित लोग समाज को भ्रमित कर श्राद्ध-तर्पण, पिण्डदान, ब्राह्मणभोज के नाम पर पाखण्ड, अन्धविश्वास बढ़ाकर लोगों को खूब ठगते हैं। मृतक के नाम पर वर्ष में एक बार पितृपक्ष में ब्राह्मणों को भोजन कराना, उन्हें दान देना श्राद्ध कहलाता है, जो वास्तव में हमारे मृतक पितरों तक तो नहीं पहुंचता, किंतु पण्डितों के उदर और घर अवश्य भर जाते हैं। हमारा अपने पितरजनों के प्रति मोह, पण्डितों के द्वारा भ्रमित करने से कि श्राद्ध-तर्पण नहीं करोगे, तो समाज क्या कहेगा, पिछली परम्परा और अज्ञानता के कारण पितृपक्ष में मृतक पित्र की तिथि के दिन तथाकथित पण्डितों के द्वारा बतायी विधि से दान और श्राद्ध करते हैं। चतुर धूर्त अशिक्षित बामन अपने यजमान को जजमान बोलकर कहता है कि जैसे यज्ञ में डाली गयी आहूति देवताओं तक पहुंचती है, उसी प्रकार ब्राह्मण को दिया दान पितरों के पास चला जाता है। क्योंकि ब्राह्मण भी अग्नि के समान है। ऐसे लोगों में अन्धविश्वास भरा हुआ है कि गया (बिहार) में मृतक के नाम पर दिया गया पिण्डदान से मृतक का तर्पण हो जाता है और यदि प्रतिवर्ष श्राद्ध न किया जाए, तो पितर भूखे-प्यासे तड़पते रहते हैं। माता-पिता भूख से तड़पते रहें और हम ऐश्वर्य भोगते रहें? क्या सच है और क्या झूठ, इसकी परख किये बिना ही समाज में यह श्राद्ध की परम्परा चल निकली। यह भी नहीं विचारा कि एक दिन ही वर्ष में क्यों? उन्हें तो समझाया गया कि जब हम अपने माता-पिता का श्राद्ध करेंगे, तभी तो हमारे पुत्र मृत्यु के पश्चात् हमारा श्राद्ध करेंगे।

श्राद्ध में ब्राह्मण कुल में जन्मे व्यक्ति को जिमाने, उन्हें वस्त्र, बरतन, चारपाई, गोदान दिया जाता है। दरिद्र या धनी, सभी पितरों का श्राद्ध करने के लिए धर्म या समाज के भय या पितरों के प्रति प्रेम के वशीभूत यह करते हैं। वैसे तो इन अशिक्षित ब्राह्मणों के प्रति समाज में घृणा है, और इनके विषय में कहते हैं कि ''न्यौता बामन शत्रु बराबर।''

पुत्र जीवित माता-पिता की तो उपेक्षा करते हैं, उन्हें भोजन, दवाइयों से महरूम रखा जाता है, वाणी से तिरस्कृत किया जाता है। किंतु उनके देहान्त के पश्चात् उनेक प्रति श्रद्धा उमड़ती है। श्राद्ध और तर्पण के नाम पर खूब लोकदिखावा किया जाता है। स्वामी दयानन्द ने वेदमंत्रों का उदाहरण देकर कहा कि दाह-संस्कार के पश्चात् कोई संस्कार शेष नहीं रहता। शरीर जब जला दिया, तो श्राद्ध किसका? यदि आत्मा का श्राद्ध करते हो, तो न तो वह वस्त्र पहनती है, न भोजन करती है। फिर न जाने किस योनी में है। जीवित व्यक्ति घर से बाहर तो क्या ब्राह्मण को भोजन कराने से उसको भोजन की तृप्ति हो जाएगी? तो मरने के पश्चात् बामन जिमाने से पितर कैसे तृप्त होंगे?

हमारी संस्कृति में मृत्युदिवस मनाने की परम्परा नहीं थी। भगवान राम, कृष्ण, हनुमान, शिव इत्यादि के जन्मदिन मनाये जाते हैं, मृत्युदिवस नहीं। अतः हम अपने प्रियजनों के जन्मदिन पर संन्यासियों, विद्वानों, दुखी, गरीबों की सेवा कर, उनका श्राद्ध करना चाहिए। किंतु आज व्यक्ति तर्क देता है कि श्राद्ध तो जीवित देवता या पितृ का नहीं, उनका किया जाता है, जिनकी मृत्यु हो चुकी है।

हम न तो शरीर को जानते हैं, न आत्मा को। हम तो अपने प्रियजन को जानते हैं, उनका श्राद्ध करते हैं। मोह में बुद्धि जड़ हो जाती है और तर्क काम नहीं आता। यह तो स्पष्ट है कि मृतक की आत्मा खा नहीं सकती, वस्त्र पहन नहीं सकती, लेकिन सोचे कौन? हमारे पास धन है, इसलिए उनके नाम पर कुछ भी कर सकते हैं। वास्तव में यह श्राद्ध नहीं है। यह जीवित के लिए है, मृतक के लिए नहीं। जीवित ही भोजन ग्रहण एवं वस्त्र पहनता है। अज्ञानी लोग इस सत्यकर्म को छोड़ मुर्दों का श्राद्ध कर, मुर्दा हो गये हैं। राष्ट्र का धन प्रतिवर्ष इस परम्परा पर नष्ट किया जाता है। एक-एक पण्डित कई-कई घरों में भोजन, वस्त्र के लिए निर्मंत्रित होता है। वह कितना खाएगा। यदि यही धन आज जीवित गरीब, वृद्ध लोगों की सेवा में लगाया जाए, तो हमारे पितृ दुखी नहीं, सुखी रहेंगे। परन्तु आंख के अन्धे चालाक ठगों से खूब ठगे जा रहे हैं। वेद के अनुसार मृतक का पितृधर्म नहीं रहता। आत्मा किसी का पितृ नहीं होता। अतः उसके श्राद्ध को पितृ श्राद्ध कहना त्रुटिपूर्ण है।

(लेख ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचन के आधार पर है)

ऐसे होते हैं आर्य

वैदिक विद्वान- श्री वेदप्रकाश शास्त्री

नयपाल सिंह आर्य

व्याकरणाचार्य, साहित्यरत्न, वेद वाचस्पति श्री वेदप्रकाश शास्त्री आर्यसमाज के प्रति समर्पित व्यक्तित्व हैं इनका जन्म उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में सन् 1927 ई0 में शिवरात्रि के दिन हुआ था। इनके पिता ने छः वर्ष की आयु में इन्हें गुरुकुल में प्रविष्ट करा दिया था। इन्होने वर्णमाला भी गुरुकुल में ही पढ़ी। पुनः सम्पूर्ण अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करने के पश्चात् प्रथमा, मध्यमा, प्राच्य व्याकरण परीक्षा उत्तीर्ण की। साथ ही साहित्य रत्न परीक्षा उत्तीर्ण कीं उसके पश्चात् 33 वर्ष तक इण्टर कॉलेज में संस्कृत तथा हिन्दी का अध्यापन किया। पं0 शंकरदेव जी व्याकरणसूर्य तथा पं0 आचार्य ब्रह्मानन्द मिश्र जैसे व्याकरण के धुरन्धर विद्वानों के चरणों में बैठकर शिक्षा प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन से ही यज्ञ, विवाह संस्कार तथा अन्य संस्कार कराने प्रारम्भ किये। इन्होंने अब तक उत्तर प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखण्ड तथा बिहार प्रान्तों में 62 वेदपारायण यज्ञ कराये हैं, जिनमें मंत्रपाठ भी स्वयं ही किया। कुछ समय पूर्व पीलीभीत में वेदप्रचार सप्ताह में इनको आमंत्रित किया गया। वेद सप्ताह के समाप्त होने पर वहां के जिला जज महोदय ने अपनी कोठी पर सादर आमंत्रित किया। प्रथम दिवस अपनी कोठी पर यज्ञ कराया तथा दूसरे दिन सभी न्यायाधीशों को अपने कक्ष में बुलाकर शास्त्री जी को आदर सहित वहां लिवाकर ले गये। वहां माल्यार्पण आदि करके सबने स्वागत किया। जिला जज महोदय ने निवेदन किया कि यहां आपका प्रवचन होना है। वहां 22 न्यायाधीश बैठे थे, जिनमें दो महिलाएं भी थीं। तब शास्त्री जी ने ''ईशावास्यमिदं सर्वम्'' तेत्र की व्याख्या करते हुए न्यायाधीशों से कहा कि आप लोग अपराधियों को दण्ड देते हुए निरपराध व्यक्तियों की रक्षा करके समाज और राष्ट्र की बहुत सेवा करेंगे। धन की तरफ आप सबकी रुचि नहीं होनी चाहिए, क्योंकि आपका सम्मान समाज में सर्वोपरि है।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश में महोपदेशक के रूप में कार्य करते रहे हैं। इनको इंटर कालेज से सेवानिवृत्त हुए 28 वर्ष बीत गये हैं। प्रचार का कार्य निरंतर चल रहा है। इनके चार औरस पुत्र हैं, तथा दो दत्तक पुत्र, जो अनाथ बच्चे थे तथा ये दोनों बच्चे मुस्लिम परिवार के हैं। इनका नामकरण करके आर्यवीर आर्य तथा विजयवीर आर्य नाम किया। इस प्रकार इन आर्य विद्वान का जीवन वैदिक सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में लगा हुआ है। इस समय श्री शास्त्री जी हमारे आर्यसमाज के पुरोहित हैं।

-प्रधान, आर्यसमाज नांगल सोती
जिला- बिजनौर (उ0प्र0)

thearyasamaj.org

विकसित द्वीप सिंगापुर से एक पत्र

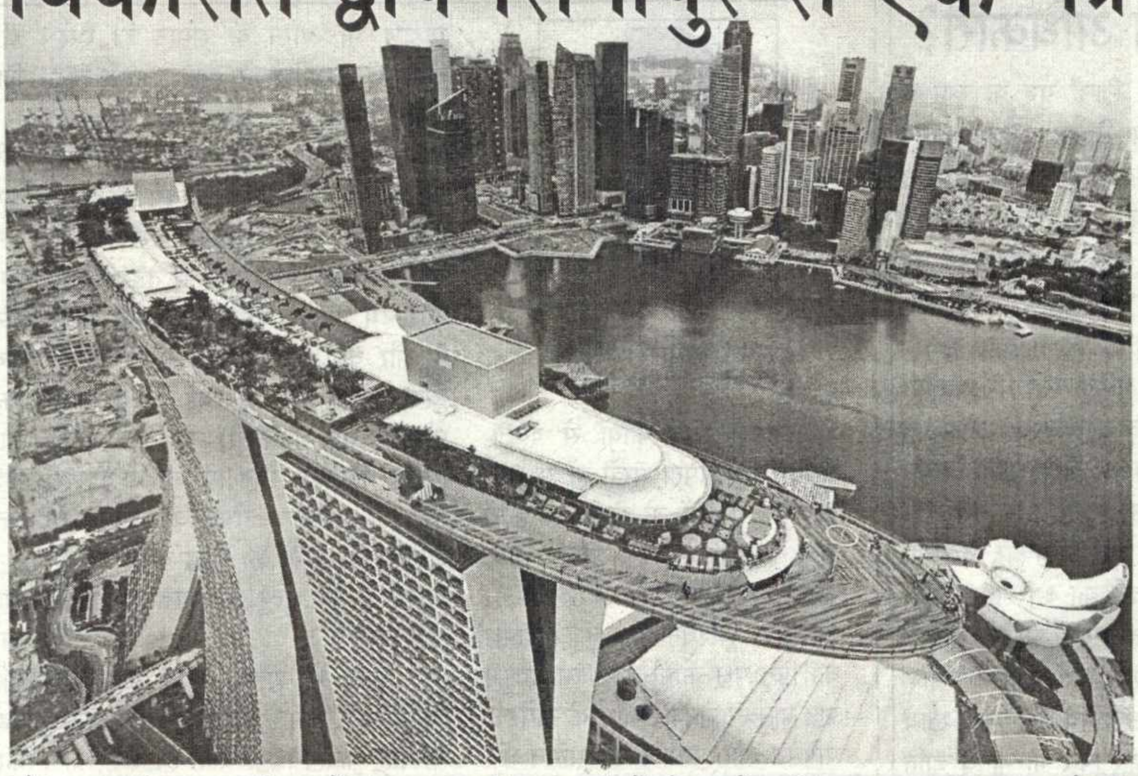

भौतिक समृद्धि, अट्टालिकाओं तथा अत्याधुनिक तकनीकों से लबरेज सिंगापुर का एक दृश्य- केसरी।

अर्यसमाज मन्दिर
११३, सैयद अल्वी रोड
लिटिल इण्डिया, सिंगापुर
११ मई, २०१४, रविवासर:

आर्यप्रवर सादर नमस्ते।

ईश्वर कृपयात्र कुशलं तत्रास्तु। 3 मई 2014 को प्रात: 11 बजे एशिया के सर्वाधिक वैभवशाली देश सिंगापुर के चांगी एअरपोर्ट पर हम एअर एशिया के वायुयान से पहुंचे। ये हमारी आठवीं विदेश यात्रा है। 9 मई को दोपहर 3 बजे सिंगापुर में भारत की महामहिम राजदूत (इण्डियन हाई कमिश्नर) श्रीमती विजय ठाकुर से एक शिष्ट मंडल के साथ जाकर मुलाकात की। आप हिमाचल प्रदेश की हैं। इसके पूर्व 8 मई को लोकसभा के सांसद सत्तारूढ़ पिपुल्स एक्शन पार्टी के वरिष्ठ नेता, अनेक कम्पनियों के स्वामी व सफल उद्योगपति, लोकसभा के पूर्व उपसभापति सरदार इंद्रजीत सिंह से उनके कार्यालय में जाकर हम भेंट कर चुके थे। दोनों ही महानुभावों को हमने वैदिक सहित्य भेंट किया, और नवम्बर में आर्य महासम्मेलन सिंगापुर के अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव में आने का आग्रह किया। दोनों ने ही इसकी स्वीकृति प्रदान की। अनेक संस्कृतियों व सभ्यताओं को मानने वाले निवासियों की स्थली सिंगापुर 63 छोटे-छोटे द्वीपों के समूह का नाम है। ये कोलकाता से 3 हजार व दिल्ली से 4500 किमी0 की दूरी पर है। इसका क्षेत्रफल मात्र 716 वर्ग किमी0 होने से लगभग बेंगलूर के बराबर है। प्राचीन काल में सिंहों का द्वीप होने से यह सिंहपुर से सिंगापुर हो गया। सुमात्रा के राजा विजया का इस पर अधिकार था। ग्यारहवीं शताब्दी में दक्षिण भारतीय सम्राट राजेन्द्र चोल ने इसे जीत लिया। 1613 में पुर्तगालों ने आग लगाकर इसे तहस-नहस कर दिया था पर जौहर के सुल्तान के अधीन रहा। सुल्तान हुसैन शाह को व्यापार का हवाला देकर ईस्ट इंडिया कम्पनी ने संधि कर कब्जा जमा लिया। द्वितीय विश्वयुद्ध में कुछ वर्ष जापान के अधिकार में भी रहा, परन्तु ब्रिटेन से करारी हार के बाद पुन: ब्रिटिश कालोनी बन गया। 31 अगस्त 1963 में इंग्लैण्ड ने इसे आजाद तो किया, पर इसे मलेशिया से संयुक्त होना पड़ा। नेताओं के सैद्धांतिक मतभेदों के चलते 9 अगस्त 1965 को यह पृथक स्वतंत्र राष्ट्र बना और तब से इसने अद्भुत उन्नति की है। यहां की जनसंख्या 54 लाख है, जिनमें बौद्ध 34 प्रतिशत, ईसाई 18 प्रतिशत, मुस्लिम 14 प्रतिशत, हिन्दू 5 प्रतिशत, अन्य 3 प्रतिशत और 16 प्रतिशत ऐसे लोग भी हैं, जो किसी भी धर्म को नहीं मानते हैं। मुख्य रूप से यहां चार भाषाएं बोली व लिखी जाती हैं। चायनीज, अंग्रेजी, मलय व तमिल। कुछ लोग हिन्दी भी बोलते हैं। यहां की नागरिकता प्राप्त करना अत्यंत कठिन है। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारत सहित अनेक देशों के गुलाम मजदूर अंग्रेजों ने यहां लाये थे। उनकी चौथी पीढ़ी चल रही है, जो अत्यंत समृद्ध, सभ्य व शिक्षित हैं। यहां की मुद्रा को सिंगापुर डालर कहते हैं, जो भारत के 50 रुपये के बराबर है। समस्त छोटे नोट प्लास्टिक के होने से उनके कटने, फटने व गलने की समस्या नहीं है। पूरे देश में 21 जिले हैं, जिनसे 80 सांसद निर्वाचित होते हैं। अल्पसंख्यकों के कल्याण व स्वपार्टी का शासन दीर्घकाल तक बना रहे, इससे पूरे देश को कुछ निश्चित भागों में बांटकर एक साथ 3, 4, 5 व कहीं 2 व 1 भी सांसद खड़े किये जाते हैं। और एक पार्टी को मिल गये संबन्धित क्षेत्र के कुल वोटों के आधार पर सभी को चुना गया माना जाता है। चाहे उसमें कोई हारा भी क्यों न हो। पूरे देश में हर राजमार्ग पर गगनचुंबी इमारतों व हयिाली को सर्वत्र देख सकते हैं। एक भी गांव नहीं है। 80 प्रतिशत निवासी मांसाहारी हैं। 11 लाख पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। दंगा, चोरी, मिलावट, बलात्कार, रिश्वत लेना-देना, यातायात उल्लंघन, ड्रग्स आदि किसी भी अपराध में कोड़ों से मारना, अत्यधिक दण्ड, देश निकाला से लेकर अनिवार्य मृत्यु का प्रावधान होने से किसी की अपराध करने की हिम्मत नहीं पड़ती है। पूरे देश में सभी जगह कैमरे लगे हुए हैं। संसार के सबसे कम भ्रष्ट देशों में इसे एक माना गया है। देश में आठ हवाई अड्डे हैं। दुनिया के सबसे ज्यादा व्यस्त बंदरगाहों में एक सिंगापुर का है, क्योंकि समुद्री व्यापार बहुत बड़े पैमाने पर है। गर्मी व बरसात होती है। ठण्ड नहीं पड़ती। नौ हजार कम्पनियों में लाखों युवक-युवतियां भारत सहित कई देशों से आकर सेवारत हैं। पाश्चात्य कम्पनियों के समय आधार पर रात 11, 12 व 1 बजे तक काम करना पड़ता है, जिससे जीवन यंत्रवत् हो गया है। अनेक लोगों के घरों में काम करने के लिए जिन सेविकाओं को रखा गया है, उन्हें 25000/- वेतन दिया जाता है। खुलापन बहुतायत में है। 60-70 प्रतिशत युवक-युवतियां, देवियां हाफ पैण्ट पहनते हैं। हर युवक को सैनिक शिक्षा अनिवार्य है। महंगाई बहुत ज्यादा है। 70 चर्च, 63 मस्जिदें, 6 गुरुद्वारे, 1 जैन मन्दिर, 23 हिन्दू मन्दिर व एक आर्यसमाज है। 1927 में आर्यसमाज की स्थापना हुई। बाद में डीएवी वैदिक हिन्दू स्कूल की प्रमुखता बन आयी। डीएवी की तरफ से 120 शिक्षिकाएं पूरे देश में हिन्दी पढ़ाती हैं। भारत में जिस हिन्दी की नयी पीढ़ी उपेक्षा करती है, यहां माता-पिता को हजारों रुपये उसके ही अध्ययन हेतु व्यय करने पड़ते हैं। अपने प्रवास में लक्ष्मीनारायण मन्दिर, आर्यसमाज व इस्कान विचारधारा वाले बांगलादेशी हिन्दुओं में हमें प्रवचन का अवसर प्राप्त हुआ। दो श्रद्धालु परिवारों में उपदेश के अतिरिक्त कुछ हिन्दी न जानने वाले तमिल महानुभावों से भी विस्तार से हमने सिद्धांतविषयक चर्चा की। व्याख्यानों में वेदों के अवतरण, विषयवस्तु, आर्यों का पराभव, उत्कर्ष, 16 संस्कार, ईश्वर का स्वरूप, राष्ट्र, परिवार व पंचमहायज्ञों पर प्रकाश डाला। दर्शनों के सूत्र व वेदों के मंत्रों को प्रमाण रूप में रखा। ईश्वर कृपा से सकारात्मक प्रभाव रहा। आर्यसमाज के अधिकारियों को वेदप्रचारार्थ कुछ सुझाव दिये। जनसामान्य में साहित्य वितरित किया। दर्शनीय स्थलों में 165 मीटर ऊंचा झूला 'बर्ड पार्क' में 5000 पक्षी, पक्षियों द्वारा आज्ञापलन, 'जू' (चिड़ियाघर) में सैंकड़ो जानवर। सैन्टोसा आइलैण्ड का आश्चर्यजनक संसार, सिंगापुर का इतिहास, चीनी देवताओं के मन्दिर, यूनिवर्सल स्टूडियो, रिवर सफारी, वाटर वर्ल्ड, हॉलीवुड ड्रीम परेड आदि प्रमुख हैं। अगला पत्र हम मलेशिया से लिखेंगे।

सफल होते हो या असफल,
है यह ईश्वर के अधीन,
इस बात से क्यों डरते हो।
प्रभु तो देखते हैं, तुम काम को कितना,
कब, कहां कैसे और किस नीयत से करते हो।।

-आपका अपना ही
आचार्य आनन्द पुरुषार्थी,
अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मिशनरी

स्वास्थ्य जगत

एक्युप्रेशर प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति

डॉ० बिजेन्द्रपाल सिंह

एक्युप्रेशर एवं एक्यूपंचर प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति है। यह प्राकृतिक चिकित्सा है, जो पहले भारत में घर-घर में प्रयुक्त की जाती थी। जहां तक संभव है, स्त्रियों में नाक छिदवाना, स्त्री-पुरुषों में कान छिदवाना, गुदना गोदना आदि एक्युप्रेशर एक्युपंचर चिकित्सा का ही भाग था, जिनसे अनेक रोगों की संभावना समाप्त हो जाती थी। आज भी अनेक घुमन्तू जातियां हाथ, पैरों, पेट, पीठ, माथे आदि पर गुदना गुदवाती हैं। वहां सुन्दरता की दृष्टि से ओ3म्, हरि या किसी का नाम लिखवा देती हैं। कुछ नहीं तो किसी पुष्प, फल, पत्ती का चिह्न ही बनवा लेती हैं।

भारत की चिकित्सा एक्युप्रेशर किसी भी प्रकार से चीन, जापान आदि में चली गयी और वहां पर इसे विशेष स्थान मिला। वहां इस पर ध्यान दिया गया, विकसित किया गया। आज हम उसी पद्धति को चीनी चिकित्सा पद्धति कहने लगे। आयुर्वेद में मर्मांगों का वर्णन है, तथा अभ्यंग चिकित्सा का विस्तृत वर्णन है। वह सब इस चिकित्सा से ही संबन्धित है।

डॉ0 आशिमा चटर्जी के अनुसार एक्युपंक्चर का आविष्कार भारत में ही हुआ। चीन की एक राष्ट्रीय गोष्ठी में डॉ0 बी0के0 सिंह ने भी यही बताया कि एक्युपंक्चर भारतीय चिकित्सा पद्धति है।

विदेशी आक्रमण, गुरुकुल व आश्रमों को नष्ट करना, संग्रहालयों को आग के हवाले करना, भारत पर होने वाले आक्रमणों से हमारे ज्ञान को अत्यधिक हानि हुई। इससे यह ज्ञान यहां से लुप्तप्राय हो गया। लुटेरों ने हमारे संग्रहालय जला दिये। पाण्डुलिपियां, जो भोजपत्र, पाड़पत्र, चीड़पत्रों पर उल्लिखित थीं, उठाकर ले गये, इससे यह पद्धति यहां पल्लवित नहीं हो पायी। आज विदेशों में इस पद्धति के अनेक चिकित्सक हैं। रक्तवाहिनी एवं स्नायुतंत्र की नाड़ियों के अन्तिम सिरा हाथ-पैरों में त्वचा के नीचे होते हैं। हाथ-पैर की नसों का संबन्ध इस प्रकार पूरे शरीर के अंगों से हो जाता है। जब इनके सिरों को दबाया जाता है, तब उनके संबन्धित अंगों पर इसका प्रभाव अवश्य पड़ता है। हमारे शरीर में स्नायु संस्थान का जाल फैला हुआ

शेष पृष्ठ १३ पर......

thearyasamaj.org

आर्य समाज क्या है?

मनमोहन कुमार आर्य

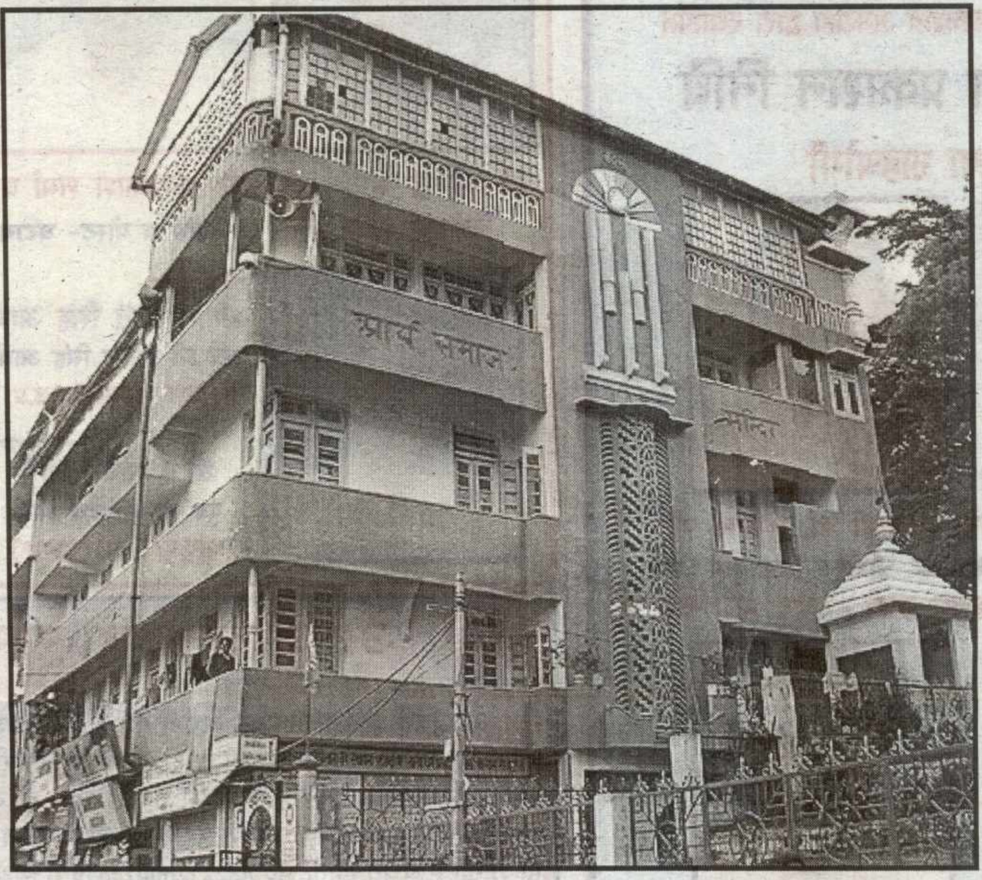

सौ साल से भी अधिक पुराने आर्यसमाज नैनीताल का भव्य दृश्य - केसरी।

इस लेख में हम कुछ प्रश्नों पर अति संक्षेप में विचार करना चाहते हैं जो आर्यसमाज के अस्तित्व से जुड़े हैं। यह प्रश्न हमें अपने एक विद्वान मित्र से इमेल पर प्राप्त हुए हैं। पहला प्रश्न है कि आर्यसमाज हवन को मानता है और आर्यसमाजी हवन करते भी हैं परन्तु आर्यसमाज हवन नहीं है। हमें लगता है कि हम यह नहीं कह सकते कि आर्यसमाज हवन नहीं है। यदि हम हवन व यज्ञ को आर्यसमाज से पृथक मान लें और आर्यसमाजी कहलाने वाले गृहस्थी हवन न करें तो क्या आर्यसमाज, आर्यसमाज रह सकेगा। हमें लगता है कि आर्यसमाज के अस्तित्व के लिए आर्यसमाज के प्रत्येक अनुयायी को दैनिक हवन के साथ ब्रह्मयज्ञ–सन्ध्या, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ व बलिवैश्व देव यज्ञ का करना आवश्यक है। इसका प्रमुख कारण आर्य समाज वेद विहित कर्मों को करना धर्म मानता है और वेद विरूद्ध कर्मों के आचरण को अधर्म या पाप मानता है। यदि आर्यसमाज का अनुयायी यज्ञ नहीं करेगा तो वह वेद विरूद्ध जीवन होगा जिससे वह अधर्मी या पापी कहलायेगा। यदि आर्यसमाज का अनुयायी यज्ञ नहीं करेगा तो पंच महायज्ञ, जो आर्य व आर्यसमाजी के लिए अनिवार्य हैं, उनके न करने से वह आर्यसमाजी न होकर नाम या कथन मात्र का ही आर्यसमाजी बचेगा। शरीर से जिस प्रकार से आत्मा के निकल जाने पर शरीर रहता है, उसी प्रकार की कुछ–कुछ स्थिति आर्य कहलाने वाले व्यक्ति की होगी। श्री राम, श्री कृष्ण, महर्षि दयानन्द, चाणक्य, सभी आर्यसमाजी व आर्य समाज के अनुयायी यज्ञ करते आ रहें हैं और इसमें सबकी आस्था है। परन्तु यहां यह भी कहना उचित होगा कि यज्ञों में पाखण्ड, अन्धविश्वास, शास्त्र विरूद्ध कर्मकाण्ड कदापि नहीं होना चाहियें। जिस प्रकार से प्रातः काल से उठकर रात्रि शयन तक हम अपने नाना नित्य कर्म करते हैं उसी प्रकार से अग्निहोत्र भी एक दैनिक नित्य कर्म है और उसे महर्षि दयानन्द की संस्कार विधि व पंच महायज्ञ विधि के समन्वय पूर्वक करना उचित है। आजकल हमारे वेदाचार्यों द्वारा जो वेद पारायण यज्ञ किये जाते हैं, यह आज की परिस्थिति में उचित, करणीय, आवश्यक, शास्त्रीय और वेदसम्मत हैं या नहीं, इस पर बहस होनी चाहिये। यदि यह उचित हों और इनसे किसी प्रकार की सिद्धान्त हानि नहीं होती, तो इन्हें किया जा सकता है अन्यथा जो उचित हो वह किया जाना चाहिये। इस प्रकार से यह विषय कुछ–कुछ विवादित सा हो गया लगता है। हम समझते कि विगत दिनों में पं. युधिष्ठिर मीमांसक, डॉ. रामनाथ वेदालंकार व स्वामी मुनीश्वरानन्द जी आदि वेद एवं यज्ञों के सुपरिचित व विख्यात विद्वान हुए हैं। इनमें से किसी ने भी वेद पारायण यज्ञों का विरोध नहीं किया। इससे यह लगता है कि वेद पारायण यज्ञ करने से कोई सिद्धान्त हानि नहीं होती, अतः इन्हें किया जा सकता है। यह बात अन्य हैं कि न तो इनका विधान महर्षि दयानन्द ने कहीं किया और न ही यज्ञ विषयक प्राचीन मीमांसा आदि दर्शन ग्रन्थों में इनका कहीं विधान है। हम चाहतें हैं कि वेद पारायण यज्ञ के समर्थक विद्वान अपने पक्ष के जो भी प्रमाण हैं वह आर्य समाज के सुधी पाठकों के सामने प्रस्तुत करें जिससे यदि अज्ञानता व अन्य कारण से कोई यज्ञ का विरोध करता है, उसका समाधान हो सके।

दूसरा प्रश्न जिसमें इस लेख में विचार करना चाहते हैं, वह है कि क्या यौगिक जीवन व्यतीत करना भी आर्य समाज है व आर्यों के लिए आवश्यक है? यदि हम योग को स्वीकार न करें तो क्या हम सही अर्थों में आर्य समाजी हो सकते हैं? इसका उत्तर भी हमें यह लगता है कि योग व यौगिक जीवन में आस्था, विश्वास व उसका अभ्यास या आचरण एक आर्य व आर्यसमाजी को अवश्य करना चाहिये। योग दर्शन महर्षि पतंजलि की रचना है जिसका आधार ईश्वरीय ज्ञान वेद हैं। "नास्तिकों वेद निन्दकः" के अनुसार वेदों की आज्ञा को न मानना या उसके विपरीत आचरण करना ही वेदों की निन्दा है। यदि कोई आर्य वेद निन्दा का दोषी पाया जाये तो वह किसी भी प्रकार से आर्यसमाजी कहलाने का अधिकारी नहीं रहता। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के तीसरे नियम में वेदों को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहकर व उसको स्वयं पढ़ने व दूसरों को पढ़ाने तथा स्वयं सुनने व दूसरों को सुनाने को परम धर्म कहा है। इसमें यह भावना भी सम्मिलित है कि वेदों के अनुसार ही आचरण करना धर्म व वेद के अनुसार आचरण न करना वा विरूद्ध आचरण करना अधर्म है। योग दर्शन के वेद के उपांग होने के कारण इसको जीवन में धारण करना भी वेदाज्ञा का पालन करना व आवश्यक कर्तव्य है। इसी प्रकार से हम सभी दर्शनों की शिक्षाओं पर विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि दर्शनों की रचना हमारे वेदों के ऋषियों ने की है जो ईश्वर का साक्षात्कार किये हुए वेदानुयायी स्थिति–प्रज्ञ महात्मा थे। अतः सभी दर्शनों का अध्ययन करना, उनका संरक्षण करना व उनकी शिक्षाओं को जीवन में अपनाना भी आवश्यक है अन्यथा हम ईश्वर, वेद, ऋषियों की अवज्ञा के दोषी होंगे। आर्यसमाज के पास वेद हैं परन्तु वेद आर्यसमाज नहीं हैं। यदि ऐसा है तो फिर आर्य समाज क्या है? यह तो ऐसा ही है कि यह कहा जाये कि मनुष्य के पास सिर, आंख, नाक, कान, मुंह व जिह्वा आदि इन्द्रियां व अंग हैं परन्तु यह सब मनुष्य नहीं है। यदि मनुष्य में से इन सबकों निकाल दिया जाये तो क्या मनुष्य बचेगा?, कदापि नहीं। अतः हवन, योग, दर्शन व वेद सभी मिलकर व इनको धारण व पालन करने से आर्यसमाज बनता है और इनका पालन व आचरण. करने वाला वैदिक धर्मी या आर्यसमाजी होता है।

हम अपने इमेल प्रेषक आदरणीय मित्र की इस बात से सहमत हैं कि हमें आर्यसमाज के 10 नियमों पर अपना ध्यान देना चाहिये। यह नियम ही आर्यसमाज की पहचान हैं। इसके साथ हम यह भी कहना चाहते हैं कि इसके लिए हमें हवन, योग, दर्शन व वेद को भी साथ रखना पड़ेगा, नहीं तो हम प्रचार क्या करेगें और करणीय व अकरणीय कर्तव्यों का निर्णय कैसे होगा? वेद आर्यसमाज की आत्मा है जिससे पृथक होकर आर्यसमाज जीवित नहीं रह सकता। वेद के साथ–साथ पंच महायज्ञों में से सन्ध्या, हवन व अन्य तीन यज्ञों के साथ हमें योग, दर्शन व वेद को भी अग्रणीय व उच्च स्थान देना होगा। जब तक ऐसा करेगें आर्यसमाज जीवित रहेगा और इन्हें छोड़ने से आर्यसमाज लड़खड़ा कर गिर सकता है। हम अनुमान करते हैं कि हमारे इमेल मित्र हमारे विचारों से सहमत तो नहीं होंगे परन्तु हमें लगता है कि हमारे विचार भी महर्षि दयानन्द की मान्यताओं व सिद्धान्तों के अनुरूप हैं। हम अनुभव करते हैं कि हमारे मित्र यदि अपने विचारों को विस्तार से व्याख्या के साथ प्रस्तुत करें तो इससे विद्वानों को लाभ होगा।

फोनः 09412985121

पृष्ठ- १२ का शेष...

एक्युप्रेशर प्राचीन ....

है। रेफ्लेक्शन सेन्टर या रेस्पोन्स सेन्टर पर दबाव देने से उस अंग में प्रतिक्रिया होनी आरम्भ हो जाती है।

एक्युप्रेशर सस्ती, सुलभ व खर्चा नहीं के लगभग होने से अत्यधिक अच्छी है। इसको आसानी से किया जा सकता है। उदर रोग, जिगर, तिल्ली, गुर्दे के रोग, श्वास संस्थान, नेत्र, त्वचा, नासिका व कर्ण रोग, पुराना दर्द, सर्वाइकल, जोड़, संधि शूल, मोटापा, रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होना, नकसीर, आधा शीशी, अनिद्रा आदि अनेक रोगों में यह चिकित्सा पद्धति चमत्कारी प्रभाव दिखाती है।

यदि इस चिकित्सा के अनुसार हाथ–पैरों के बिन्दुओं पर नियमित प्रेशर होते रहें, तो अनेक रोगों को होने से बचाया जा सकता है। पहले व्यक्ति पूरे बदन पर तेल आदि की मालिश किया करते थे। नंगे पैर चलते थे। खड़ाऊं पहना करते थे। इससे अनेक रोग होते ही नहीं थे।

इस चिकित्सा पद्धति के लिए हमारे देश में भी विकास की आवश्यकता है। जितने भी ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट चिकित्सा की पद्धति हैं इस ज्ञान को भी उससे सम्बद्ध करना चाहिए, जिससे प्रत्येक को इस सस्ती सुलभ उपयोगी पद्धति का ज्ञान हो सके।

-गली नं०-२,
चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा,
जिला- बुलन्दशहर
मोबा. : 08979794715

आर्यावर्त प्रकाशन
अमरोहा द्वारा
प्रकाशित पुस्तक
आज ही मंगाएं
दयानन्द सप्तक
(सवैया संग्रह)

कवि- वीरेन्द्र कुमार राजपूत
प्रकाशक- आर्य उप प्रतिनिधि सभा
कार्यालय : आर्यावर्त कॉलोनी,
निकट मुरादाबादी गेट,
अमरोहा-244221 (उ०प्र०)
दूरभाष : 05922-262033
मूल्य : तीन सौ रु० प्रति सैंकड़ा

आर्यावर्त केसरी
वर्गीकृत विज्ञापन
कॉलम में विज्ञापन
देकर लाभ उठाएं-
व्यवस्थापक

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा स्थापित

सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि

के उदारमना सहयोगी

आचार्या डॉ. सुमेधा जी तथा आचार्या डॉ. सुकामा जी
श्रीमद्दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चौटीपुरा शिखापुरम (उ.प्र.)
द्वारा रुपये 11000/- (ग्यारह हजार रुपये) सप्रेम भेंट किये गये

श्रीमती शकुन्तला देवी
आर्यावर्त कॉलोनी, अमरोहा

श्री सुमन कुमार वैदिक
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)

द्वारा रुपये 11000/- (ग्यारह हजार रुपये) सप्रेम भेंट किये गये

हमारे नये आजीवन सदस्य

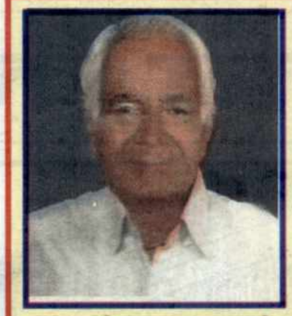

डॉ. वीरेन्द्र कुमार दुबे
जबलपुर (म.प्र.)

श्री सत्यप्रकाश शर्मा व श्रीमती कृष्णा देवी शर्मा
ग्राम व पोस्ट- घटायन (मुजफ्फरनगर) उ.प्र.

श्री मानवेन्द्र सिंह आर्य
पुत्र श्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य
दढ़ियाल, अमरोहा (उ.प्र.)

श्री हर्षवर्धन आर्य
पुत्र श्री ऋषिदेव आर्य
टनकपुर (उत्तराखण्ड)

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर.-05922-262033, चल.- 09758833783 / 08273236003

जय हिन्द जय हिन्द

समस्त क्षेत्रवासियों का हार्दिक अभिनन्दन

वंदन अपनी मातृ भूमि का,
आराधन अपनी भाषा का।

अभिनन्दन अपनी संस्कृति का,
नमन कोटि जन अभिलाषा का॥

डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य)

सम्पादक- आर्यावर्त केसरी/अध्यक्ष- रूटा (RUTA)
बरेली-मुरादाबाद खण्ड स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से 'एम.एल.सी.' के
सम्भावित प्रत्याशी
(Mob. : 09412139333)

आर्यावर्त केसरी
संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com